वर्ष ▸02 | अंक ▸04 दिसम्बर 2022

हाम्रो सन्देश

हिमालय पर हिमालय की खोज

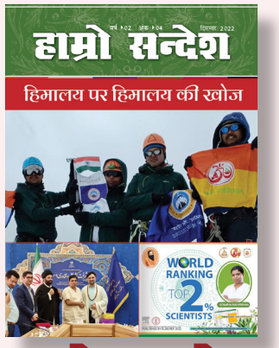

हाम्रो सन्देश

आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन
योगऋषि परम पुज्य स्वामी रामदेवज्यु महाराज
एवं
आयुर्वेद शिरोमणि परम श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण महाराजज्यु

सम्पादक
मोहन कार्की

कार्यालय
हाम्रो स्वाभिमान ट्रस्ट
योग समिति भवन
पतंजलि योगपीठ, फेस-।।
निकट बहादराबाद-249405
हरिद्वार

+91- 7217016080

headoffice@hamroswabhiman.com

www.hamroswabhiman.com

Facebook YouTube

परम पुज्य स्वामी जी महाराजको लेख 03
हाम्रो धर्म: धर्म 08
हाम्रो संस्कृति: जीवनमा भाषाको महत्व 12
हाम्रो पहचान: गोरखा एक वीर योद्धा 14
हाम्रो संबंध: Dr. Bhupen...Community 16
जागरूकता: संविधान 24
इतिहास: पाणिनि तपोभुमि 30
आहार विहार: सेब की... 38

हिमालय पर हिमालय की खोज 04

स्वास्थ्य व सेहत: 5 Pran... 40
स्वास्थ्य व सेहत: आयुर्वेदीय 42
देश के आयुर्वेद ... पतंजलि अग्रणी 44
Representing India In Iran 47
Acceptance of Ayurveda-Based Bhasmas... 50
हाम्रो गौरव: National Award Winners 52
हाम्रो संस्कृति: 3rd Online Deusi Bhailo Competition 58
चित्र प्रदर्शनी 60

हाम्रो सन्देश नेपाली परम्परा र संस्कृतिको बारेमा सचेतना फैलाउनेको लागि एक पहल हो।
पढ्नुहोस् र साझा गरेर नेपाली भाषा/भाषी हरुको आवाजलाई बुलन्द बनाउनहोस्।

परम पूज्य योगऋषि स्वामीजी महाराज की शाश्वत प्रज्ञा से निःसृत शाश्वत सत्य ...

मनुष्य की सबसे बड़ी भूल या कमज़ोरी

परमात्मा व प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ रचना है मनुष्य- स्त्री व पुरुष दोनों ही। परन्तु अनन्त ज्ञान, संवेदना व शक्ति सामर्थ्य के होते हुए भी मानव महामानव व पुरुष महापुरुष, युगपुरुष क्यों नहीं हो पाता। नर से नारायण या जीव से ब्रह्म की यात्रा में कौन सी मानवीय भूलें या दुर्बलताएं हैं, हम यहाँ संकेत कर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि हमारे भाई-बहन इन दोषों से बाहर निकलकर अपने जीवन को समग्रता के साथ समझकर स्वयं को पूर्ण विकसित करेंगे-

01. प्रमाद।

02. अनप्रोडक्टिव या अनुत्पादक श्रम।

03. स्व का अज्ञान। अपने भीतर सन्निहित असीम ज्ञान, अनन्त प्रेम व अपरिमित सामर्थ्य को न तो पूरा जानना, न उसे पूरा जगाना। जीवन रूपी बीज को वृक्षरूप नहीं देना।

04. निराशा, कुण्ठा या निरुत्साह में जीना।

05. प्राथमिकताओं के चयन में अनिर्णय या अनिश्चय की स्थिति में रहना। परिणामतः शुभ संकल्प, पुरुषार्थ व अभ्यासों की निरन्तरता नहीं बनना।

इन पाँच मुख्य दोषों, दुर्बलताओं या भूलों के कारण मनुष्य स्वयं तथा समष्टि के साथ पूरा न्याय नहीं कर पाता और भगवान् के इस महान् अस्तित्व में उसे जो एक दिव्य भूमिका निभानी चाहिए उससे वह वंचित रह जाता है।

मेरा तथा पूज्य आचार्यश्री बालकृष्ण जी सहित पतंजलि संस्था, संगठन तथा हमारे समस्त पुरुषार्थ का प्रमुख प्रयोजन यही है कि प्रत्येक मनुष्य अपनी महिमा को समझे, भगवान् की महिमा, भारत की महिमा तथा इस पूरे अस्तित्व की महिमा को समग्रता से समझे तथा अपने दिव्य ईश्वरीय कर्त्तव्य या उत्तरदायित्व को निभाए। हमारे प्रयत्न की विभिन्न धाराओं से आंशिक या समग्र रूप से यह कार्य अवश्य घटित हो रहा है तथा हमें पूर्व विश्वास है कि एक दिन समष्टि में दिव्यता अवश्य घटित होगी, प्रथम कुछ व्यक्तियों में तथा धीरे-धीरे समष्टि में भी, क्योंकि मूल मांग तो सभी आत्माओं की पूर्ण दिव्यता व पूर्णता की ही है।

हिमालय पर हिमालय की खोज

परम श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण जी महाराज

मानव पदचिन्हों से वंचित अनामित, अनारोहित, अविजित पहाड़ियों पर विजय प्राप्त करना अपने आप में बहुत साहसपूर्ण कार्य था।

पहले भी इन हिमशिखरों पर विजय पाने के लिए बड़े रूपों में कई बार प्रयास हुए, जिसमें अंतिम प्रयास आज से 42 साल पहले हुआ था।

पूज्य स्वामी जी महाराज के आशीर्वाद से गौमुख से ऊपर अति दुर्गम क्षेत्र में, अनामित व अनारोहित तीन शिखरों पर आरोहण कर पतंजलि ने एक नया कीर्तिमान रचा है। 14 सितम्बर 2022 को इस विशेष अभियान दल को गंगोत्री से उत्तराखण्ड के माननीय मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिह धामी जी तथा पूज्य स्वामी रामदेव जी द्वारा फ्लैग ऑफ करके विदा किया गया था। इस अभियान में सहयोगी संस्था नेहरु पर्वतारोहण संस्थान (NIM) के प्रिंसिपल कर्नल अमित बिष्ट व पूरी टीम का इस अभुतपूर्व कार्य में सहयोग प्राप्त हुआ। इस विजय यात्रा के दौरान हमने लगभग 550 दुर्लभ जड़ी–बूटियों की पहचान कर उनकी चौक लिस्ट बना ली है तथा उनका हर्बेरियम तैयार किया जा रहा है। इन जड़ी–बूटियों पर गहन अनुसंधान का कार्य किया जाएगा। यह यात्रा अत्यंत दुर्गम रही। चारों ओर केवल बर्फ ही बर्फ। सोने के लिए बर्फ की सतह तथा ओढ़ने के लिए बर्फ की चादर। जीवन में पहली बार 12 दिन तक स्नान किए बगैर रहना पड़ा।

1981 में अन्वेषण का काम पहली बार किया गया

मानव पदचिन्हों से वंचित अनामित, अनारोहित, अविजित पहाड़ियों पर विजय प्राप्त करना अपने आप में बहुत साहसपूर्ण कार्य था। पहले भी इन हिमशिखरों पर विजय पाने के लिए बड़े रूपों में कई बार प्रयास हुए, जिसमें अंतिम प्रयास आज से 42 साल पहले हुआ था। हिमालय के इस क्षेत्र में स्वतंत्रता के पश्चात 1981 में अन्वेषण का कार्य Joint Indo French Expedition Team के द्वारा किया गया था। इस अन्वेषण दल को अथक प्रयासों के उपरान्त भी आधे क्षेत्र का भ्रमण करने में ही सफलता प्राप्त हुई थी। इस सयुंक्त दल ने हिमालय के रक्तवर्ण ग्लेशियर क्षेत्र में स्थित जीवनदायनी जड़ी–बूटी तथा अन्य महत्वपूर्ण पादपों तथा औषधीय पौधों का अन्वेषण किया। उसके बाद किसी ने वहाँ पहुँचने का प्रयास ही नहीं किया।

अनामित, अनारोहित, अविजित पहाड़ियों पर विजय

पतंजलि योगपीठ ने यह जो इतिहास रचा, यह क्षण गौरवान्वित करने वाला है। इन अनामित, अनारोहित हिम शिखरों का अपनी

परम्पराओं के आधार पर नामकरण कर हमने सनातन परम्परा व ऋषि संस्कृति के लिए प्रज्ज्वलित यज्ञाग्नि में अपनी आहूति दी है।

हमनें हिमालय पर जड़ी–बूटियों की खोज के साथ–साथ हिमालय में हिमालय की खोज की तथा अनामित व अनारोहित तीन चोटियों (हिम शिखिर) की खोज करके उनकी स्थिति, परिस्थिति और प्राकृतिक स्वरूप के आधार पर उनका नामकरण किया है। राष्ट्रीय गौरव तथा महान ऋषि–मुनियों की तपस्थली के आभास से दल के मन में यह भाव आया कि 6,000 मीटर से ऊपर, सबसे ऊँची चोटी को राष्ट्रवाद की परम्परा के आधार पर राष्ट्रऋषि, उसके बराबर में दूसरी चोटी का नाम योग परम्परा के आधार पर योगऋषि तथा उसके बाँये तीसरी चोटी का नाम आयुर्वेद परम्परा के आधार पर आयुर्वेद ऋषि रखा। इन तीनों चोटियों के मध्य के वृहद् क्षेत्र का नाम हमने ऋषि ग्लेशियर या ऋषि बामक रखा।

गंगोत्री के रक्तवर्ण ग्लेशियर क्षेत्र में अन्वेषण का कार्य आरंभ

पतंजलि नेहरु पर्वतारोहण संस्थान, उत्तरकाशी तथा भारतीय पर्वतारोहण संस्थान, नई दिल्ली के सयुक्त रूप से गंगोत्री के रक्तवर्ण ग्लेशियर क्षेत्र में पर्वतारोहण तथा अन्वेषण अभियान का आरम्भ 10 सितम्बर 2022 से 25 सितम्बर 2022 तक पतंजलि योगपीठ के नेतृत्व में किया गया।

यह अभियान विशेष इसलिए भी था कि 15 दिनों तक भारी हिमपात तथा विषम प्राकृतिक प्रतिकूलता में हमने अदम्य साहस से जटिलताओं का सामना करते हुए जटिल तथा दुर्गम हिमालयी क्षेत्र में सफलता प्राप्त की। जब यह दल रक्तवर्ण ग्लेशियर क्षेत्र में आगे बढ़ा तो प्रथम दृष्टि में हिमालय में तप करते हुये ऋषि की आकृति का बोध हुआ तथा हिमालय के इनर लाइन में समग्रता से तप भूमि का आभास बार–बार प्रतीत हुआ।

इस संयुक्त दल में नेहरु पर्वतारोहण संस्थान से पर्वतारोहण प्रशिक्षक श्री दीप शाही जी तथा श्री विनोद गुसांई जी ने प्रतिभाग किया। पतंजलि आयुर्वेद से डॉ० राजेश मिश्रा तथा डा० भास्कर जोशी के अतिरिक्त अन्य सदस्यों ने प्रतिभाग किया। भारतीय पर्वतारोहण संस्थान नई दिल्ली की ओर से श्री विहारी राणा ने प्रतिभाग किया।

हिमशिखर आरोहण की विजयी यात्रा के पश्चात्
पतंजलि पहुँचने पर पूज्य आचार्य जी महाराज का अभिनंदन समारोह

धर्म

-तारापति उपाध्याय

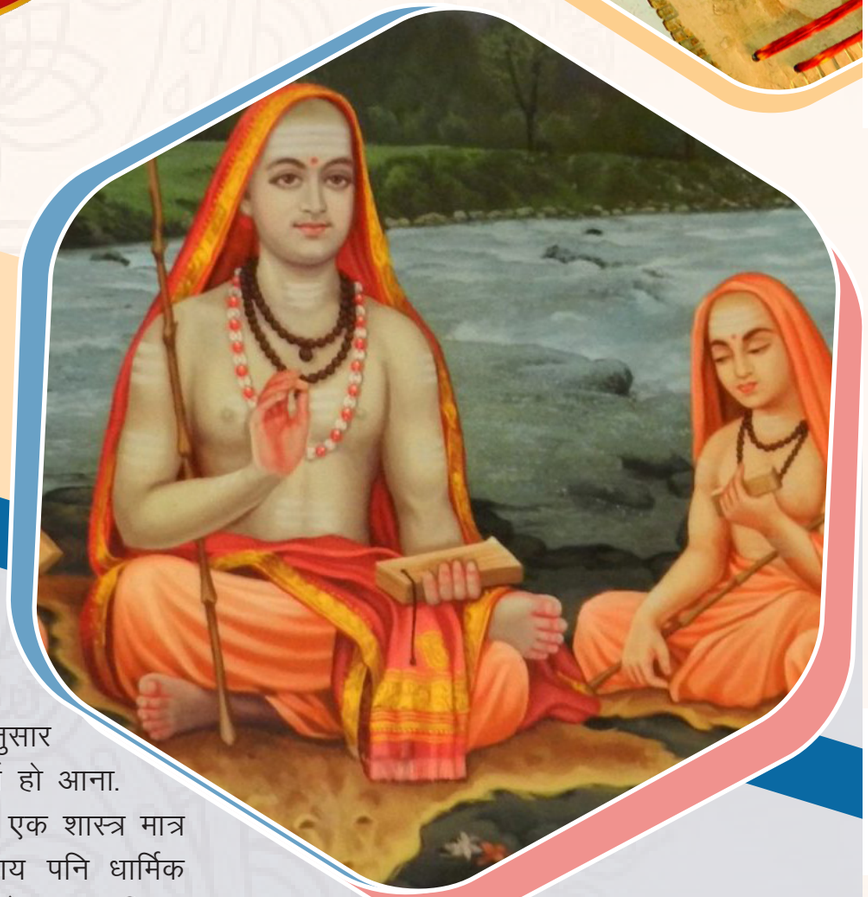

धर्मभन्दा मानिस साधारणतरू उपासना पद्धतिलाई बुझ्दछन। उपासना, धर्म विधि. को एकांश मात्र हो। शास्त्रानुसार धर्मको अर्थ–नातन। अर्थात–धर्म हो आना. दि, अनन्त, ईश्वर स्वरूप। कुनै एक शास्त्र मात्र मानेर चल्ने मानिस या सम्प्रदाय पनि धार्मिक मानिँदैनन् या होइनन्। यस देशमा आस्तिक नास्तिक–सबै सम्प्रदाय धार्मिक हुन सक्छन्, बन्दूछन्–यदि तिनीहरू निर्दिष्ट उत्तम सदाचार नीति मानेर चल्दछन्।

धर्म शब्दमा तीन विषय समाविष्ट छन्– उपासना, आध्यात्म र आचरण।

सनातन धर्मले उपासनामा मानिसलाई निज प्रकृति या स्वभाव अनुसार पूर्ण स्वतन्त्रता दिएको छदृ सगुण, निर्गुण, मौन, प्रकाश्य–भजन, कीर्त्तन, जप, तप सबै मान्य छन्। आध्यात्म धारणा, कल्पनामा भने मतान्तर छ। तापनि मानिस स्वतन्त्ररूपमा निज, निज मतानुसार चल्न सक्द. छन्, बाधा छैन। धर्मको तेस्रो या अन्तिम विषय हो, आचरण। यस कुरामा भने ऐक्यमत नितान्त आवश्यक छ। इस्लाम, बौद्ध, खिस्ट, जैन आदि

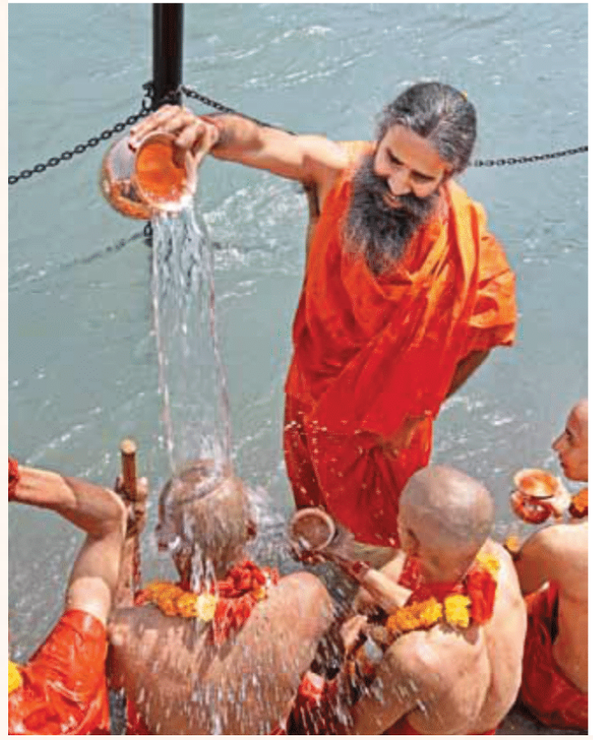

सबै धर्ममा मानिस व्यवहारिक एकमत या आचरण मानेर चल्दछन्। यस नीति या व्यवहारिक धर्मला. ई आधुनिक अर्थमा मानविक धर्म भनिन्छ। यसैमा निहित या समाहित छ, पूर्ण धर्म धारणा। तर, यो व्यवहारिक–मानविक धर्म पनि भारतीय सनातन धर्मको एक विशेष अङ्ग मात्र हो, पूर्ण धर्म होइन।

महर्षि शङ्कराचार्यका मतानुसार वैदिक धर्म दुई प्रकारको पाइन्छ– प्रवृत्ति र निवृत्ति। 'द्विविधो हि वेदोक्त धर्मः प्रवृत्ति लक्षणो, निवृत्ति लक्षण च। जगत स्थिति कारणं प्राणीनाम् साक्षाद् अभ्युदय निःश्रेयसहेतयः। अर्थात– जगत् रहेको कारण औ प्राणीहरूको उत्कर्ष साधन साथै मुक्ति या मोक्षको कारण, यी दुई पवित्र कर्म नै प्रकृत धर्म हो, वास्त. विक धर्म हो। जो मानिसहरू, 'मोक्ष' कुरालाई

अप्रमाण्य भन्दछन्, मान्दैनन्, तिनले पनि अभ्युदय या उत्कर्ष साधन मान्दछन, स्वीकार्छन्। यही 'अभ्युदय' अर्थमा ऋषि मुनिहरूले वर्णाश्रम सृष्टि गरेका थिए। मानिस जीवन कालका चार आश्रम–ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम र संन्यासाश्रम सृष्टि गरी प्रत्येक आश्रमको कर्त्तव्य पनि निर्धारित गर्न भुलेका थिएनन्। यो पद्धति अक्षत रहुन्जेल सम्म मानिस–समाज निरन्तर उन्न. तिका पथतर्फ लम्किरहेको थियो। रोकिएको थिएन।

कालान्तरमा समाज संस्कारकहरूले यस पद्ध तिमा दोष, विषमता बोध गर्दै समता स्थापनार्थ पृथक नीति, पद्धति अनिवार्य अनुभूत गरे। यसैले आज वर्णाश्रम, प्रायरू उच्छन्न, छैन। निज इच्छा औ अभिरुचि अनुसार हर व्यक्तिलाई कार्य गर्ने स्वतन्त्रता छ, गर्न सक्छन् भन्ने कुरामा विश्वास जागेर आयो। यसरी वर्णाश्रम पद्धति नष्ट या खेर हुन जाँदा मानिस जीवनमा अन्य नयाँ समस्या खडा हुन लागे। यी समस्या समाधानार्थ आज मानव समाजमा चिन्ताशील, गुणी, ज्ञानी जनहरूले आत्म नियोग गरी काम गरिरहेका छन्।

धर्मको अर्थ अनेक। कर्त्तव्य–कर्म पनि धर्मै हो। हर नर–नारी कुनै न कुनै कार्यमा नियोग रहन्छन्। भाग्यले प्राप्त जो काम पनि तन, मन–वचन अर्पिई, समर्पित रूपमा गर्यो भने नै धर्म हो। यही हो स्वधर्म। स्वधर्म पालनले नै आत्मिक कल्याण ल्याउँछ, अभ्युदय अर्थात् जीवनिक उत्कर्ष साधन पनि गर्दछ। यसै अर्थमा धर्मले धार्मिक जनलाई रक्षा गर्दछ अर्थात्, 'धर्मो रक्षति रक्षितः।' धर्म नीति पालन नगर्ने, नमान्ने जन पनि सामाजिक केही न केही नीति मानेर चल्दछन्। नीति धर्मान्तर्गत हुनाले ती मानिसहरू पनि धार्मिक हुन्छन्।

सनातन धर्म विस्तारित छ मानव जीवनव्यापी। सामाजिक, प्रशासनिक, आर्थिक विषयहरू नै हुन् मानिस जीवनका व्यवसाय। यस्ता सबै कर्ममा नीति, नियमको आवश्यक पर्छ, हुन्छ। शास्त्रमा भएका वर्ण धर्म त्यस्ता नीतिका आधारमा रचित थिए। उदाहरणार्थ ब्रह्मचार्याश्रम (विद्यार्थी–धर्म), गृहस्थाश्रम (गृहस्थी–धर्म) आदि। त्यसरी नै स्त्रीधर्म, राजधर्म, पितृधर्म, पुत्रधर्म आदि। प्रयोजनीय मानव जातीय जीवनादर्श नीतिहरूलाई संस्कृतमा शील, प्राकृतमा चरित्र र अङ्ग्रेजीमा केरेक्टर भनिन्छ। हाम्रा शास्त्रहरू 'शील' माथि अति निर्भरशील छन्। महाभारतमा 'शीलहरण' (चरित्रहरण) का कुरा यस प्रकार वर्णित पाइन्छः–

राक्षस राजा हिरण्यकश्यपुका पुत्र प्रहलाद थिए श्रेष्ठ विष्णुभक्त धार्मिक युवक। तिनको चरित्र–व्यवहारिक दिशा या आचरण अति सुन्दर, मनोग्राही तथा आकर्षक थियो। फलतः प्रभावित हुँदै क्रमशरू मर्त्य, पाताल र स्वर्ग पनि स्वतः राजा प्रह्लाद अधीन हुन गए। यस्तो दुरावस्थामा पर्दा देवराज इन्द्र, गुरु बृहस्पति, मुनि नारद, शुक्र आदि समीप पुगेर मुक्तिको उपाय खोजे। अनि, तिनीहरूको परामर्शानुसार तिनले दरिद्र ब्राह्मणको भेषमा गएर राजा प्रह्लादको सेवा गर्न थाले। ब्राह्मणरूपी इन्द्रका सेवामा प्रभावित प्रहलादले एकदिन ब्राह्मणलाई बोलाई पठाएर तिनको पीठ सुमसुम्याउँदै भने, 'तिम्रा कार्य तथा व्यवहारले मसारै सन्तुष्ट भएँ। मबाट तिमी इच्छानुसारको वर माँग– जे माग्छौ त्यही दिन्छु।'

ठुलो सुयोग पाए ब्राह्मणरूपी इन्द्रले र हात जोडेर भनेरू 'साँच्चौ मलाई वर दिनुहुन्छ भने महाराज, आफूमा रहेको 'शील' या चरित्र स्वभाव मलाई दिनुहोस्।'

राजा प्रह्लादले सँग–सँगै ब्राह्मणका शिरमा हात राखेर 'तथास्तु' भनिदिए। लगत्तै राजा प्रह्लादका शरीरबाट एकपछि अर्को दिव्य तेजस्वी रूप निस्किएर ब्राह्मण रूपी इन्द्रतर्फ जान लागे। चकित हुँदै प्रह्लादले पहिलो रूपलाई सोधे–'तिमी को हौ?' रूपले उत्तर दियोः 'म हुँ शील।

तिमीले मलाई त्यागेका हौ न? म यी ब्राह्मणतर्फ जान्छु।' त्यसपछि निज शरीरबाट निस्कने दोस्रो तेजस्वी रूपलाई प्रश्न गर्दा उसले भन्यो, 'म हुँ धर्म। शील जहाँ जान्छ, म त्यतै जान्छु। शील मेरो आश्रम हो, घर हो।' त्यसपछि निस्कने तृतीय महातेजले भन्योरू 'म हुँ सत्य। जहाँ शील र धर्म रहन्छन्, म त्यहाँ निवास गर्छु।' यसरी चतुर्थ, पञ्चम र षष्ठ तेजस्वी रूप 'सदाचार', 'शक्ति' र 'लक्ष्मी'हरूले पनि प्रह्लादको शरीर त्यागी 'शील' तर्फ लागेका थिए। प्रह्लादका प्रश्नको उत्तर लक्ष्मीले यस प्रकार दिएकी थिइन्, शीलेन हि त्रयोलोकास्तया धर्मज्ञ निर्जिताः।

तद्विज्ञाय सुरेन्द्रेण तव शीलं हतं प्रभो।।
धर्म, सत्यं तथा वृत्तं बलं चौव तथाप्यहम्।
शीलमूला महाप्राज्ञ सदा तास्त्यत्र संशय।।

अर्थ, हे धर्मज्ञ! तिमीले तिम्रा सुन्दर, मनमोहक शीलद्वारा स्वर्ग, मर्त्य, पाताल यी तीन लोक विजय गरेका थियौ। धर्म, सत्य, सदाचार, बल या शक्ति र म (लक्ष्मी) का आधार नै शील या चरित्र। यो कुरा जानेर नै इन्द्रले आफूका शरीरको शील हरण गरेका थिए। शील नै हो सबै कुराको मूल। यस कुरामा सन्देह छैन। अर्थ स्पष्ट हुनगयो, चरित्र या शील धर्म अन्तर्गत तापनि शीलमा नै धर्म निवास गर्दछ। श्रीमद्भागवत पनि भन्छः–

अहिंसा, सत्यमस्तेय काम, क्रोध लोभता।
भूत प्रिय हिते हाच धर्मोऽयं सार्ववर्णिकः।।

अर्थात– अहिंसा, सत्य प्रीति, काम, क्रोध, लोभ वर्जित, प्राणीमात्रकै हितकारी चिन्ता या इच्छा नै हो सार्वजनिक धर्म। यस अतिरिक्त राष्ट्र–निष्ठा अति प्रयोजनीय। यसैले, 'जम्बुद्वीपे भारतखण्डे'–शास्त्रहरूको विधान। शृण्वन्तु अमृतस्य पुत्रारू–माता भूमिः। अर्थ, अमृतका सन्तान (पृथ्वीका सन्तान) सुन, भूमि नै माता, मातृ। 'धर्म एव हतोहन्ति, **धर्मो रक्षति रक्षितः। अर्थात् जो मानिसले धर्मनाश गर्दछ, तिनलाई धर्मले विनाश गर्छ। जसले धर्म रक्षा गर्दछ। तिनलाई धर्मले रक्षा गर्दछ।**

हिन्दु धर्मः– अन्य धर्महरूझैं यो कुनै निर्दिष्ट कालमा, कुनै ज्ञानी पुरुष या नारीद्वारा सृष्टि भएको पनि होइन। यो हो सृष्टिका आदिकालबाट भनौं क्रमशरू चिन्तशील जनहरूले निज अभिज्ञतापुष्ट ज्ञानद्वारा मानव–जीवन सार्थक पार्ने पथ प्रदर्शन गर्दै आएको नैतिक नीतिको समावेश हो। यसर्थ यसको नाम सनातन धर्म हो। यसले वेदमा विश्वास राख्दछ।

जीवनमा भाषाको महत्व

चन्दना रोका दार्जीलिंग

प्रत्येक भाषाद्वारा नै व्यक्तिको जाति तथा संस्कृति छुटिन्छ। वर्तमान युगमा भइरहेका प्रत्येक यसबाट जस्तै सामाजिक, बौद्धिक, मानसिक आर्थिक तथा नैतिक परि-वर्तनको मुख्य स्रोत नै भाषा हो कारण भाषा नभएको भए हामीले केही बोहन र पढ़न सकदैन थियों। भाषा शुद्ध रुपमा बोहन र लेखन सिकेर मात्र हामीले अरू विष यहरुका ज्ञान आर्जन गर्न सक्षम भयौं। यसैले भनिन्छ भाषा विचार विनिमयको साधन हो। यही भावहरू अन्य भाषाहरुमा प्रकट गर्न हामीबाई धेरै अप्ठयारो पर्छ साथै त्यस भाव को वास्तविक विषय बुझन हामी असमर्थ रहन्छौं जसको मुख्य कारण हो भाषा, किनमने अन्य भाषामा भावप्रकाश गर्नु र भावग्रहण गर्न समय बाग्छ। यसै सन्दर्भमा प्रसिद्ध शिण शास्त्रीहरू भन्नुहुन्छ 'मातृभाषाको

www.hamroswabhiman.com

अंग्रेजी भाषाले प्रभाव पारेर होला शायद हिजआत सबै अभिभावकहरुले आफ्ना शिशुहरु अंग्रेजी पाठशालामा मात्र भर्ना गरिरहेको हामो पाउँछौं। यसो गर्नाले शिशुहरुको भविष्य त उज्जवल भएर जानसकछ तर तिनीहरुको जीवनमा मातृभाषाको स्थान भने दिनछुँ घटेर जानेछ। त्यसको अर्थ यही लगाउन सकिन्छ कि हाम्रो जीवन मातृभाषाको परिचय असल प्रकारले भएको दैन अथवा हामीले जीवनमा भाषको महत्व राम्ररो बुझेका छैनौं, यसैले आज एम.ए.र.एम.एसी. सम्म पढ़ेका मानिसहरुत्वे आफ्नो भाषामा शुद्ध रूपलेएउटा सानो आवेदन पत्रसम्म पनि लेखन असमर्थ हुँदछ। जसबाट अनुमान लगाउन सकिन्छ कि केवल मानिस मात्र विकसित भइरहेको छ तर मातृभाषा होइन।

मातृभाषाको प्रयोग सरल शुद्ध रूपमा बोल्न सिकाउनुपर्छ। यस विषयमा शत–प्रतिशत भूल अभिभावकहरुका नै छ कारण तीन वर्ष पुगेगा शिशुहरुले आफ्नै मातृभाषा सटिक टंगमा बोल्न सिकेका हुँदैनन्। त्यस समयमा नै उसले अंगेजी भाषाको माध्यमद्वारा ज्ञान प्राप्त गर्नु थाल्छ। जसको फलस्वरूप ती शिशुहरुले न त मातृभाषाका सटिक शिक्षा प्राप्त गर्नसकछन् त अंगेजी भाषाको यसरी दुवै भाषाको चपेटमा परेर शिशुहरु भीरको चिण्डो उधों उभौ भएर जान्छ। यसरी वर्तमानमा मातृभाषाको यस्मतो अवहेलना देख दुःख लागेर आउँछ। मातृभाषाप्रति नानीहरुको चारव र जिज्ञासु बढ़नु नै हामी शिक्षित व्यक्तिहरुको मुख्य कर्त्तव्य बन्दछ। मातृभाषा अति सजिलो र सुगम छ यसलाई सहजै ग्रहण गर्न सकिन्छ। फलस्वरूप लुप्त भएर गइरहेको हाम्रो भाषा र संस्कृतिबाई जोगाएर राख्नमा सक्षम बन्नसकने छै।

गोरखा एक वीर योद्धा

विमल सिंह राणा

गोरखा से अभिप्राय गुरु गोरखनाथ जी और उनके नाथ सम्प्रदाय से ही हैं, गुरु गोरखनाथ जी चूंकि नेपाल में ही अवतरित हुए थे और उन्होंने ही लगभग 8वीं सदी में गोरक्षा, गोरक्षक कालान्तर में गोरखा नाम की उत्पत्ति हुई ऐसा ही इतिहास में वर्णित है।

अपनी बेमिसाल वीरता, भोलेपन की छवि एवं देश पर जानिसार होने वाला गोरखा समुदाय किसी परिचय का मोहताज नहीं है। 'कायर होने से मरना बेहतर' जैसे विचारों में पलने वाले, राष्ट्र रक्षा में सदैव अग्रणी, नागरिक दायित्व सहित सरहदों की सुरक्षा के लिए गोरखा हमेशा अडिग एवं सबसे आगे रहने वाले प्रथम पंक्ति में सदैव तत्पर रहे है। वीर गोरखा ने देश की सेवा के लिए अपने स्तर पर लगभग हर क्षेत्र में अपना योगदान दिया है।

राष्ट्र सेवा में अहम योगदान देने में गोरखा समुदाय में तो अनेकों हीरे हैं पर इनमें से कुछ बेहद अहम हीरे हैं। उनमें से परमवीर चक्र विजेता धन सिंह थापा, प्रथम स्वतंत्रता सेनानी शहीद मेजर दुर्गा मल्ल, राष्ट्रीय गीत के रचयिता कैप्टन रामसिंह ठाकुर, मास्टर मित्रसेन थापा सहीत अनेकों अनेक गोरखा वीर है जिन्होंने देश सेवा में खुद को न्योछावर कर गोरखा कौम के गौरव एवं मान को बढ़ाया है। आजादी के विभिन्न मोर्चों में भी गोरखा समाज की अतुलनीय भागीदारी रही है, दांडी यात्रा में गोरखा वीरों ने गांधी जी के साथ अपना अभूतपूर्व योगदान दिया जिसमें दल बहादुर गिरी, महादेवी गिरी, होशियार सिंह, खरग बहादुर आदि का नाम भी सर्वप्रथम हैं।

विश्व में सबसे बड़े वीर सम्मान विक्टोरिया क्रॉस से विभूषित एकमात्र गोरखा सदैव भरोसे, विश्वास एवं स्वाभिमान का पर्याय यूं ही नहीं है। गोरखाओ का नाम केवल मात्र देश की सुरक्षा में ही सीमित नहीं है वरन् हिन्दुस्तान देश के आजादी के बाद संविधान का मसौदा तैयार करने के समय भी गोरखाओ की अग्रणी भूमिका रही है एडवोकेट अरि बहादुर गुरुंग एवं डम्मर बहादुर भी देश के इस संविधान निर्माता टीम के हस्ताक्षर रहें हैं।

गोरखाओं ने देश सेवा का असाधारण उदाहरण प्रस्तुत किया है प्रथम फील्ड मार्शल मानेकशॉ ने कहा था कि 'जो ये कहता है कि मुझे मृत्यु का भय नहीं है या तो वह झूठ बोल रहा है या वो गोरखा होगा' ये कथन गोरखाओ के असीम देशप्रेम एवं देश के प्रति त्याग का धोतक है।

आजादी के पूर्व से वर्तमान तक देश के प्रति गोरखाओ के अतुलनीय बलिदान के ऐसे बहुत से यथार्थ उदाहरण है जो ये साबित करते हैं कि भारतीय गोरखा ही सबसे अधिक विश्वसनीय कौम है।

'मिटा दिया है वजूद उनका जो गोरखाओ से भिड़ा हैं'।

'देश के रक्षा का संकल्प लिये हर गोरखा खड़ा है।'

"If a man says he is not afraid of dying, he is either lying or is a Gorkha"

Field Marshal Sam Manekshaw

DR. BHUPEN HAZARIKA AND THE GORKHA COMMUNITY

-Anjan Baskota

The Bharat Ratna Dr. Bhupen Hazarika is in the true sense, a manifold artist of assimilation.

Throughout his life he sings for the sake of humanity, peace, communal harmony and integrity. He is such a profound scholar who can chant round the clock on any themes he likes. Being a mouthpiece of the soil and the race, he tried whole heartedly to represent the Assamese society and culture in the global platform at large. A music maestro in the real sense, Dr. Hazarika's melodious vocal tune could mesmerize the people from nook and corner of the universe. Not only in Assam but also in Indian scenario he is widely accepted as an established singer, lyricist, melody king and as an efficient music director. Not only that, his unique talent in the world of music carries him beyond the geographical boundary of the country and provides him a separate universal recognition.

Most of the songs sung by the Bharat Ratna Dr. Hazarika represent by and large the communities of Assam like the Tea Tribe, Bodo's, Kachari's, Mising, Michimi, Aka, Dofola, Naga, Garo, Gorkha, Rabha, Deuri, Dimasa, Hajong,Lalung, Muslims of Chhar area etc. There are perhaps no communities of Assam not reflected in Dr. Hazarika's songs. Really, Dr. Hazarika a perfect messanger of assimilation. He plays a pivotal

role in building a bridge of mutual understanding and brotherhood among the multiple communities of Assam. Dr. Hazarika maintained a mutual, cordial relationship with the Gorkhas of Assam. He loved the Gorkha community from the core of his heart. Dr. Hazarika was only Ten years old when his father Nila Kanta Hazarika introduced him with the lovely Tezpur town. Bhupen Daa got the blissful company of Rupkuwor Jyoti Prasad Agarwala and Kalaguru Bishnu Prasad Rabha. Their mighty influence enshrined and enlightened his educational as well as cultural life. By profession, his father was a higher official of Tezpur court. Because of this, a large number of Gorkha people visited their house frequently. The musical talent of Anju Devi, a little singer girl of the Gorkha community was newly explored by Dr. Hazarika. The tuneful melody of this girl attracted Dr. Hazarika a lot. In the initial stages, Dr. Hazarika used to carry her with him in various cultural functions where he was invited to perform. Slowly, Dr. Hazarika provided opportunities to Anju Devi to perform in many concerts. Because of his efforts she was promoted as a co-singer to perform many musical functions with Dr. Hazarika including Bihu festival and other cultural occasions.

Dr. Hazarika not only gave his divine tune to many Nepali songs, and made the community feel pride but also the particular Gorkha cap that the music maestro had worn enhanced the status of that community. The peculiar cap that he worn till his last breath is known

hinn's collection

as "Bhad Gaule Topi". 'Topi' in Nepali is a cap. "Bhad Gaule Topi" is a special type of cap which is prepared in 'The Bhad Gaule' area of our neighouburing country Nepal. But the 'Sudha Kantha' took the 'topi' with utmost love, respect and care and introduced it to other parts around the globe. For that grand reason, the Gorkhas of Assam renamed the particular cap as "Dr. Bhupen Hazarika Topi". This is one of the evidences of how much the Gorkhas love and respect him. Dr. Hazarika worn this cap for nearly fifty years in his head which was gifted to him by the then king of Nepal once he had visited the Royal Palace of Nepal with a team of artists of Assam. Dr. Hazarika could compose wonderful songs at any moments he liked. One suchinteresting incident happened in the year 1955 when he was returning to Guwahati from Nagaon. He saw a Gorkha girl chasing a cow in Khetri from the window of the bus. Howmarvelously he could transform this ordinary incident to an immortal, historical song:

"Phut Gadhulite Kapili Khutit
Kun Gorkhali Gavarure gaijoni heral

Gaijoni nu kene
Tulona je nai
Henu khei Saporit
Tair man gakhiroti nai
Kanchiye ringiyaye- 'O! Bogi gai
O! lakhsmi gai....
Oi! Tumi dekhun nahile mur
Byabokayo nai....'

Khei mitha mator chiyore Kapili kopaye
(Tair) Ruptirthar yatri ejon mathun ase
Gaon tar Khetri, khi Nal Bahadur Chhetry
Gai bisorar sole, monor morom jase
(Khei) morom dekhi Kanchhi joni ronga pori jaye...."

English Translation:

"In the dusk at Kapili (1) cowshed One Gorkhali girl has lost a cow The cow was such Had no comparison In that vast river bank area There was no milky cow like her.

Kanchi (2) calls out 'O! white cow O! Lakshmi (3) cow If you don't come My business will be ruined'

The melodious cry vibrates through whole Kapili There's only one who loves her much Khetri (4) is his village, he is Nal Bahadur Chhetry Pretexting her during cow search he expresses his love Kanchi turns red feeling her beloved's love...."

The exact picture of Nepali community of that time with their cow keeping and farming being the only source of livelihood, is so accurately portrayed by Dr. Hazarika that this rare song has attained a special identity in the Nepali socio-cultural context. From a very reliable source, we have come to know that Dr. Hazarika could speak the Nepali language more or less. Since he had been in a close contact with the Gorkha people from his childhood, he used to converse with them in the Nepali language. He also established a marital family relationship with the Gorkha people by welcoming

Shova Subedi (Hazarika) as his sister-in-law. Late Shiva Kumar Subedi (5) was his neighbor. He maintained a cordial relation with the neighboring Subedi family. Shova Subedi, daughter of Late Shiva Kumar Subedi and Sabitri Subedi was very challenging and talented girl since her childhood.

She was a member of local 'Moina Parijat' (6) . She too was a child singer of that period. Dr. Hazarika saw her inner potentiality and offered her chances to sing in different Bihu and cultural functions along with him. In the year 1987, Samar Hazarika, brother of Dr. Hazarika, and well known musician of the time married Shova Subedi. Dr. Hazarika did a noble job by uniting these two loving hearts through traditional rituals. The man behind this marriage was no other than Dr. Hazarika. Thus, Dr. Hazarika family welcomed a Gorkha girl as a daughter-in- law symbolizing universal brotherhood.

Dr. Hazarika gave ample scope to Anju Devi to sing in the documentary 'Rup kunwor Jyoti Prasad Agarwala aaru Joymoti' films like 'Bon Hangsha', 'Bon Jui', 'Angikar' etc and in many other audio cassettes. By lifting the position of an unknown girl Dr. Hazarika introduced a Gorkha girl to the world of music and enshrined her as a singer. On Anju Devi's request Dr.Hazarika showered his melodious tune in Nepali audio cassette "Doko" in which Dr. Hazarika and Anju Devi jointly recorded in many immortal songs. The lyrics, rhythm and tune coined by Dr. Hazarika in the cassette were translated into the Nepali language by the reknown poet Hari Bhakta Katuwal and Goma Sarma. A famous song from the said audio cassette is quoted below-

"Doko he doko
Doko vitra dhanei dhanei chhan...
Doura Suruwal chha sahuka...
Mero chhoralai yespali
Chadma dinu sakina auta voto..."

English Translation:

"Doko (7) oh! Doko
There is plenty of paddy corps
Doura Suruwal's (8) are available in vendors shop
I am unable to give my son
Even a voto (9) in this festive season...."

After the mass popularity of the audio cassette "Doko", the famous song "Phut Gadhulite...." was translated into the Nepali language in which Dr. Hazarika along with Anju Devi recorded their fine voices. Here are some lines from that song- *"Sajh voi aayo Kapili pari Kun Gorkhali tarunile pyari Gai lai horai..."*

English Translation:

(The meaning is same with the Assamese song 'Phut Gadhulite....Kapili Khutite' The topic mentioned in the title is wide and varied. It cannot be analyzed in an article. It is a matter of expanded research. True, the artist like Dr. Hazarika who sings for the humanity 'Manuhe Manuhar Babe' (Man for man's sake) is hard to find in the present day context. What could be more humanitarian in spirit than the following few lines from his song:

"Byakti Jodi Byakti kendrik
Samasti Jodi byakitta rahit
Tene Khithil samajk nabhanga kiyo?"....

English Translation:

"If people are self-centered
And a society without unique norms Why not you destroy it?"

टिस्टा एक नाम अनेक

माधव खनाल

रुटिस्टा एक नाम अनेकरु उत्तर सिक्किम गुरूदुङमारदेखि पोखरी रसाएर बगेको यो पानी जहाँ गुरूदुङमार नामले परिचित सिलिङ बिलिङ बगेको जलधारा बग्दै थपिंदै सोही खोल्सा बन्छ जति तल झर्छ उति मिस्सिंदै थाङ्गुबाट ओह्रालो खोला भएर जहाँदेखि लाचेन छु भन्न थालिन्छ सानो पानी अनेक झरना थपिंदै तर्न नसकिने भएर लाचेन पुग्दछ जहाँ यसलाई लाचेन छु भनी जानिन्छ।

जब लाचेनमा आईपुग्दा तर्न नसकिने अनवरत बग्दै महकुमा चुङथाङ पुग्दछ जहाँ विपरीतदिशाबाट बग्ने अर्को खोला युमथाङ माथिको पहाड रसाएर आएको लाचुङ हुँदै उसरी नै लडाइँ लडदै बाटो बनाउदै संघर्षरत झर्दछ ओह्रालै यी दुईको रमाइलो संगम चुङथाङमा दुई खोलाको मिलन पवित्र भएर बग्छ लाचेनछु र लाचुङछुको सुन्दर दोभान सिक्किमको इतिहास कोर्न टिस्टा भएर यात्रा अघाडिन्छ छङ—छङ आवाजमा बिचबिचमा

दुवैतिरबाट मिस्सिनेक्रम अटुट रहन्छ खोला झन–झन बड्दै पहाडको फेदमा बग्दै जाँदा बाटोमा डाँडा, भञ्ज्याङ र पहाड नाग्दै लुकि–लुकि बग्ने कनकाको संगम त्यो पवित्र दोभानमा कनका हुन्छिन् उत्तर सिक्किमको नाम्प्रिकदाङ टारमा पुनः कनका नामले चिन्निन्छ टिस्टालाई दिक्चु बजार नकाटेसम्म कनका बग्छिन् सिक्किम भूमिको कोमल न्यानो काखमा माखा अघि राथङछु मिस्सिन्छ अनि त त्यसपछि आफ्नो स्वरूप टिस्टा हुन्छिन्यात्रामा धेरै ठाडा खोलाहरू मिस्सिन्छन्बग्दै सिङताम आइपुग्दा सिङताम खोला रङपु पुग्दा रङ्पु खोला मिस्सिए पनि टिस्टा आफ्नो स्वरूपमा गंगा भएर बग्छिन् पवित्रता छर्दै, हरियाली ज्ञान–गंगा छर्छिन्एक भएर मिलनको ठूलो श्वास फेर्दै टिस्टा पुग्दा त्रिवेणी भएर रंगित नदिले मधुर स्पर्श गरेर त्रिवेणी संगम टिस्टा बग्छ त्रिवेणीको पवित्र धारामा मकर नुहाइन्छ यसरी खोला नदि भएर सलल बग्दै पानीको यात्रा निरन्तर बगिरहेको हुन्छ जतिसुकै अवरुद्ध यात्रामा आए पनि छिरेर, नागेर, भरिएर र भत्काएर पनि पानी, खोल्सा, खोला, नदी, समुद्र हुँदै सागरमा मिस्सिएर महासागर हुन पुग्छ पुनः वाफ भएर बादल भई आसमानमा अनि बाफ पानी भएर पृथ्वीको वक्षस्थलमा जल जीवन हो।

जीवन यसरी नै चल्दछ टिस्टाले नदिले सरि मानवले पनि सधैं स्वरूप बदलिएर स्वभाव नाम नबदलाउँ यही सन्देश सधैंभरि टिस्टाले हामीलाई सुनी राखौं बुझीराखौं सत्य सधैंभरिलाई टिस्टा एक नाम अनेक जीवन भरिलाई ऋग्वेद देखी रोबट युग सम्म अनन्तलाई।

संविधान

–ले. कर्नल भूपेन्द्र सिंह क्षेत्री (अ.प्रा.)
देहरादून, उत्तराखण्ड

संविधान की यदि संक्षिप्त व्याख्या किया जाये तो सम्भवतः निम्न विवरण मिलता प्रतीत होता है।

किसी राज्य, राष्ट्र के कोई भी उच्च संस्था आदि के संगठन, विघटन, संचालन, स्थगत आदि के व्यवस्था को नियमों अनुसार चलाने के लिए लिखित मूल विधान व मूल कानून को संविधान के नाम से सम्बोधन करना उचित माना जा सकता है। सम्पूर्ण राष्ट्र को एक लिखित कानून के तहत मूल श्रोत से चलाने का नाम संविधान हो सकता हैं सुचारू व्यवस्था व प्रबन्धन करना ही संविधान का अभिन्न अंग हो सकता है। साहित्यिक कृत वस्तु, शिल्प आदि को एक सूत्र में बाँधकर मिलाने का काम भी संविधान के अन्तर्गत गठित होता प्रतीत होता है। राष्ट्र की व्यवस्था, उसको पूर्ण समावेश करके प्रबन्धन करके संचालित करना भी संविधान का रूपेण हो सकता है।

यहां पर मैं, ''मैं'' शब्द का उच्चारण बहुत ही संवेदनशील होकर कर रहा हूँ। मैं जानता हूँ, कि ''मैं'' एक अहंकारी शब्द है। वस्तु स्थिति को मध्य नजर रखकर मैं, 'मैं' शब्द का प्रयोग बहुत ही शालीनता से कर रहा हूँ।

मैं अपने आपको बहुत भाग्यशाली समझता हूँ कि मेरा जन्म भारत स्वतन्त्र होने से तीन साल पहले हुआ है, मेरे जन्म के दो साल बाद, 9 दिसम्बर 1946 को 11 बजे दिल्ली के संविधान गृह में संविधान सभा का पहला सम्मेलन औपचारिक रूप से प्रारम्भ हुआ था। इस सभा के लिए सम्पूर्ण भारत से (आज के पाकिस्तान व बंगलादेश मिलाकर) अति योग्य जाने माने व सम्मानित व्यक्तित्व के उच्च गुण से ओत–प्रोत 389 महानुभावों का जमघट भारत के संविधान के लेखन सम्बन्धित महान सोच रखकर सुदृढ़ नीव रखने व स्थापित करने के लिए एकत्र हुए थे। इसी दिन उद्घाटन के समय पर ही डा. राजेन्द्र प्रसाद जी को संविधान सभा के नेतृत्व के पद से सुशोभित किया गया था। बाद में भारत स्वंतन्त्र होने पर डा. राजेन्द्र प्रसाद जी भारत के प्रथम राष्ट्रपति के पद पर आसीन हुए। 26 जनवरी 1950 को जब मैं छह साल का था, तो भारत एक गण राज्य घोषित होकर भारत का संविधान भारत का अभिन्न अंग बन गया। इस सबके लिए मैं अपने आपको बहुत भाग्यशाली मानता हूँ। 26 जनवरी 1950 का वह उमंग भरा दिन मुझे आज भी याद है। बाकी सब ऊपर लिखे विवरण व वाक्य मुझे पढ़ने के पश्चात् ज्ञात हुआ।

जैसा कि ऊपर विवरण किया गया है कि इस संविधान निर्माण के स्वरूप तैयार करने के लिए भारत से 389 उत्कृष्ठ महानुभावों का चयन हुआ था। 14–15 अगस्त 1947 को भारत का विभाजन हुआ, और भारत का विघटन होकर एक बड़ा हिस्सा भारत वर्ष बना व दूसरा हिस्सा पश्चिम पाकिस्तान व पूर्वी पाकिस्तान के नाम से नया देश बनकर स्वरूप में आया। भारत के विभाजन के साथ–साथ संविधान सभा के चयनित सदस्य भी संविधान सभा से अलग होकर पश्चिम पाकिस्तान व पूर्वी पाकिस्तान के साथ जाकर उस देश के नागरिक बन गये। इसके फलस्वरूप अब संविधान सभा की संख्या घटकर 299 रह गई। घटने का मुख्य कारण बहुत संख्या में देश छोड़कर जाना हो सकता है, या बहुत थोड़े कुछ महानुभाव के वृद्ध होना, स्वस्थ न रहना या, फिर स्वर्गवास होना भी हो सकता है। 26 जनवरी 1950 में जिस दिन संविधान हस्ताक्षर होकर तैयार हुआ, तो उस दिन इस पर हस्ताक्षर करने वालों की संख्या ओर घटकर 284 ही रह गई थी। इस प्रकार संख्याओं के घटने का कारण, या तो सदस्यों का स्वस्थ न रहना या फिर देश के बाहर किसी कारण जाने से, या फिर मृत्यु भी हो सकता है। इन तीनों संख्याओं, 389, 299 व 284 का महत्व व संविधान में उपयुक्त स्थान पाने के सम्बन्ध में आगे विवरण मिलेगा।

मेरे निम्न लिखे इस विचार को कृपया अतिशयोक्ति न मानकर केवल उपमा स्वरूप समझकर, हमारे संविधान की रचना को वेदों के रचना स्वरूप मानकर श्रेष्ठ स्थान दिया जाए तो,

PAINT, CEMENT, HARDWARE & BUILDING MATERIAL
CHANDI CHARAN NAYAK
124-1, BOWBAZAR ST., CALCUTTA
Phone: B.B. 4301 • Gram: PAINTSMART

Amrita Bazar Patrika

REG. NO. C. 58. 79TH YEAR OF PUBLICATION VOL. LXXIX, NO. 200.
ALLAHABAD, SATURDAY, JULY 19, 1947. Editor—TUSHAR KANTI GHOSH TOWN EDITION, 2 ANNAS.

LEUCODERMA
LEPROSY

BIRTH OF TWO NEW FREE DOMINIONS

INDIA INDEPENDENCE BILL RECEIVES ROYAL ASSENT

FINAL PARTING OF WAYS TO-DAY

Congress & Muslim League Members In Interim Cabinet To Separate

LONDON, July 18.—The great new Dominions of India and Pakistan were born and the 400,000,000 people of India came into their inheritance of full political freedom, when in the British House of Lords at 10-10 G.M.T. to-day (4-10 p.m. I.S.T.) a Royal Commission of peers with ceremony and ritual dating back to William the Conqueror's time, announced the Royal assent to the India Independence Bill.

The ceremony which transferred Britain's 200-year-old responsibility for India to the people of that country took barely 15 minutes. The Royal Commission, indeed, within the brief span of time, passed 18 Bills of which India Independence, sandwitched between a Penicillin mea-

BEVIN DENIES CHARGE OF CREATING DIVISION

EUROPE MUST PLAY MAJOR ROLE IN WORLD CIVILIZATION

LIGHT ON BRITAIN'S DOMESTIC CRISIS

Nations Have To Move With Great Care And Patience

HASTINGS (Sussex), July 18.—The British Foreign Secretary, Mr. Ernest Bevin, today emphatically denied that he was trying to divide Europe or any part of the world.

Speaking at the annual conference here of the Transport and General Workers' Union, the world's largest trade union, Mr. Bevin said he had struggled for

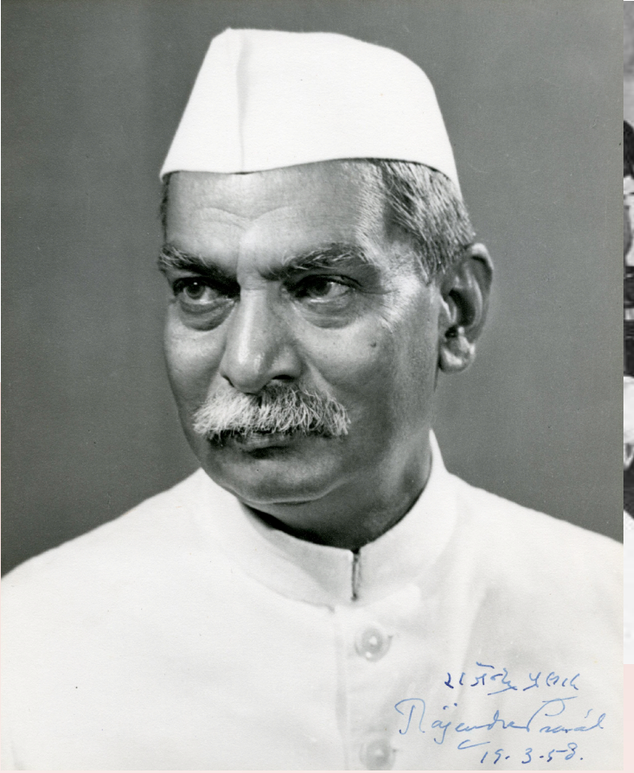

इन रचनाकारों के परिश्रमों को पारितोषिक प्रदान करने योग्य माना जा सकता है, जिस प्रकार हमारे वेदों की रचना में तीन मुख्य शिरोमणि वेदांगी (वेदशास्त्र के अनुभवी) क्रमशः महर्षि व्यास जी, ऋषिवर सुद जी व भगवान श्री गणेश जी का नाम अग्रिम व उत्कृष्ठ स्थानों पर आता है। चुंकि विवरण आता है कि महर्षि व्यास जी वेदों के ज्ञान की व्याख्या कर रहे थे, ऋषिवर सुद जी सम्पूर्ण वेदों के ज्ञान की व्याख्या को ध्यानपूर्वक सुन रहे थे। भगवान श्री गणेश जी सम्पूर्ण वेदों के ज्ञान को लिखकर कलम बन्द कर रहे थे। ठीक वैसे ही यहां पर भारत संविधान के रचना के समय पर डा. राजेन्द्र प्रसाद जी ऋषिवर सुद जी के भूमिका निभाकर सभी वक्ताओं के तर्क–वितर्क, सुझाव विवरण आदि को ध्यान से सुनकर समावेश कर रहे थे। शुरू में श्री बी.एन. राव (राउ)जी व बाद में डा. बी.आर. अम्बेडकर जी ने अपने–अपने हाथों से कलम से लिखकर संविधान सभा में श्री भगवान गणेश जी का किरदार निभाया था। बाकी बचे हुए संविधान सभा के गणमान्य सदस्यों ने महर्षि व्यास जी का स्थान लेकर अपना बहुमूल्य समय निकालकर अपने–अपने विवेकानुसार संविधान सभा को सुझाव, सलाह, संदेश देकर भारत के संविधान को वेदों स्वरूप बनाकर भारतवासियों को उपहार स्वरूप भेंट कर भारत को सुदृढ़, सुसंगठित व सुशोभित बनाने में पूरा योगदान प्रदान किया था।

इन 389 पुण्य आत्मायें जिन्होंने भारत के संविधान की रचना की थी, आज इनमें से कोई भी जीवित नहीं है। यदि आज हम सभी भारतवासी कृतज्ञ होकर इन सभी 389 संविधान रचियताओं के अथक प्रयास को पारितोषिक करना चाहते हैं, तो अभी भी हम सभी के पास एक विकल्प है। जिस प्रकार से हम अपने महान विभुतियों के स्मरण हेतु आदम अनुरूप मूर्ति या पुण्य स्थल का विशाल निर्माण करके उनके द्वारा योगदान का उल्लेख लिखकर कृतज्ञता प्रर्दशित करके सम्मान प्रदान करते हैं। ठीक इसी प्रकार आज जब हम सब भारतवासी, ''आजादी का अमृत उत्सव'' मना रहे हैं, संकल्प लें कि भारत के संविधान के पिछत्तर वें वर्ष गाँठ में, ''प्लेटीनियम संविधान दिवस'' का आयोजन करेंगे। इस भव्य आयोजन के लिए सभी 130–140 करोड़ भारतवासियों का स्वंय का योगदान रहेगा। यह स्वोच्छिक योगदान प्रत्येक भारतवासियों को गौरवान्तित होने का आभास प्रदान करेगा। भारत सरकार उपयुक्त स्थान का देश के राजधानी दिल्ली में चयन करके एक भव्य, ''भारत के संविधान भवन, ''निर्माण हेतु एक प्रस्ताव बनाकर, पास करके निर्माण कार्य शुरू करके निर्धारित समय सीमा 75 वें वर्षगांठ में कार्य सम्पन्न करके उद्घाटन तिथी निर्धारित करके कार्य शुरू किया जा सकता हैं, इस भवन में 389 (या जो संविधान सभा को मध्य में ही छोड़ कर पश्चिम पाकिस्तान और पुर्वी पाकिस्तान चले गये थे, उन सभी का नाम हटाकर) कमरों का निर्माण प्रत्येक संविधान सभा के सदस्यों के नाम से बनाया जा सकता है। ये सभी कमरे पुर्णरूप से सुशोभित सुन्दर रहने योग्य व आर्कर्षित शयन कक्ष के रूप में योग्य होना चाहिए। ये कमरे कोई भी आने वाले आगन्तुकों व मेहमानों के लिए उपयोग किया जा सकता है। प्रत्येक कमरा जो भी संविधान सभा के सदस्य के नाम पर निर्माण हो रहा है, उनका फोटों व उनके द्वारा संविधान सभा में दिया गया योगदान का संक्षिप्त विवरण सुन्दर शब्दों में लिखा जाए। सभी को समान सम्मान देने हेतु एक ही जैसा कमरों का निर्माण हो, तो समानता में एकता का बोध प्रदान देने में सहायक होगा। यद्यपि बहुत ही सम्मानित व उल्लेखित संविधान निर्माण कर्ता के नाम बड़े–बड़े हाल, मिलन केन्द्र, पुस्तकालय आदि का चयनकर उनके नाम में रखा जा सकता है। बड़े–बड़े विश्व स्तर के शिखर सम्मेलन आदि का आयोजन भी इसी संविधान स्थल भवन पर किया जा सकता है। ऐसे महत्वपूर्ण अवसर पर

LARGEST NET SALES of any Daily Newspaper Printed in Northern, Southern, Central or Western India. REGD. No. B111

The Times of India

NO. 195. VOL. CIX. BOMBAY: FRIDAY, AUGUST 15, 1947 PRICE TWO ANNAS

BIRTH OF INDIA'S FREEDOM

NATION WAKES TO NEW LIFE

Mr. Nehru Calls For Big Effort From People

"INCESSANT STRIVING TASK OF FUTURE"

Assembly Members Take Solemn Pledge

WILD SCENES OF JUBILATION IN DELHI

NEW CABINET OF INDIA

Fourteen Members

PANDIT NEHRU TO BE PREMIER

Mrs. Naidu's Message

STATE VISIT TO KARACHI

LORD MOUNTBATTEN GREETS PAKISTAN

Mr. Jinnah Re-Affirms Firm Friendship With Britain

MR. GANDHI TO FAST TODAY

Also League Leaders

Pakistan's First Cabinet

ELEVENTH-HOUR CHANGE

FRENZIED ENTHUSIASM IN BOMBAY

Crowds In Festive Mood

"MAY BOMBAY PROSPER"

Governor's Message

GOOD WISHES TO FREE INDIA

Indore Joins Union

आये हुए विदेशी आगन्तुकों को भी यही पर इन कमरों में रहने की व्यवस्था किया जा सकता है।

जैसा कि मैंने आग्रह किया है कि इस पूर्ण निर्माण में हम सभी 130–140 करोड़ भारतवासियों का सहृदय सहयोग होना अति सम्मान स्वरूप होता है। यदि, ''न्याय उचित'', हो तो, प्रत्येक भारत के नागरिकों के परिवार के मुखिया द्वारा अपने–अपने परिवार के सभी सदस्यों का नाम क्रमबद्ध करके एक रु. 100/– (एक सौ रुपये मात्र) के शपथ पत्र में लिखकर अपने–अपने गांव पचायत, नगर निगम वार्ड, पार्षद, ग्राम प्रधान, नगर निगम अध्यक्ष, कैन्ट बोर्ड अध्यक्ष होते हुए तहसील, कैन्ट बोड ओर आगे जिला, प्रदेश होते हुए भारत के संविधान भवन (निर्माणधीन) में पहुँचाकर, एक लिखित सूचनार्थ स्वरूप भारत के नागरिक होने का प्रमाण व प्रस्ताव भेजा जा सकता है। यह सभी सूचना संविधान भवन में लिखित रूप से प्रत्येक परिवार से आये हुए दस्तावेज मानकर सुरक्षित रखा जाए तो न्याय उचित माना जा सकता है। सम्पूर्ण विवरण को कम्प्यूटर में डाटा के रूप में अलग से सुरक्षित रखा जा सकता है। इस रु. 100/– के शपथ पत्र का नाम, ''संविधान सभा शपथ पत्र'' दिया जा सकता है।

यदि मोटा मोटी हम यह मानकर देखें कि एक छोटा संयुक्त परिवार की संख्या पाँच या छह के बीच मानकर चलें तो, यदि भारत की जनसंख्या 140 करोड़ के लगभग आती है तो शपथ पत्र परिवार की संख्या दो करोड़ अस्सी लाख के आस पास आती है (140 करोड़/5 = 2 करोड़ अस्सी लाख)। यदि इस दो करोड़ अस्सी लाख रुपये को एक सौ से बराबर गुणा करने पर लगभग दो अरब अस्सी करोड़ रुपये के बराबर शपथ पत्र का मूल्य आता है। यह दो अरब अस्सी करोड़ रुपये धनराशी पूरा का पूरा संविधान सभा के खाते में जमा होना चाहिए। इस धनराशी से भारतीय संविधान भवन का निर्माण सम्भवतः बहुत ही सरलता से हो सकता है, इसमें प्रत्येक भारतीय नागरिक का योगदान प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से दर्शित होता है। प्रत्येक भारतीय नागरिक को इसमें अपना योगदान देने का गर्व का बोध व स्वाभिमान होना पूर्ण रूपेण दिखाई देता है।

 # जय भारत भारत माता की जय

 # जय भारत

 # प्रस्तावित उद्घोष

 # आजादी का अमृत उत्सव का समापन

 # भारतीय संविधान सभा निर्माण भवन प्रारम्भ

पाणिनि तपोभूमि

-कृष्ण बन्जाडे

नेपाल के पश्चिमी भाग लुम्बिनी प्रदेश, अर्घाखाँची जिला के पूर्वी भाग में पाल्पा जिला के निकट सीमावर्ती क्षेत्र समुद्र तल से करीब 1800 मीटर अर्थात् करीब 5000 फीट की ऊँचाई में अवस्थित समतल भू–भाग स्थित स्थल, पडेना और पोखरा थोक के ऊपरी भाग में स्थित महर्षि पाणिनि तपस्थली, जहाँ महर्षि पाणिनि ने भगवान सदा शिवजी को प्रसन्न करने के लिए घोर तपस्या की थी। तत्पश्चात् आशुतोष भगवान ने प्रसन्न होकर भक्ति भाव से परिपूर्ण होकर नाचते हुए डमरू को चौदह बार बजाया। जिसके फलस्वरूप चौदह ध्वनियाँ अवतरण हुईं। यही चौदह ध्वनियाँ माहेश्वर सूत्र हुए। (1) अ इ उ ण् (2) ऋ लृ क् (3) ए ओ ङ् (4) ऐ औ च् (5) ह य व र ट् (6) ल ण् (7) ञ म ङ ण न म् (8) झ भ ञ (9) घ ढ ध ष् (10) ज ब ग ड द श् (11) ख फ छ ठ थ च ट त व् (12) क प य् (13) श ष स र् (14) ह ल्

चौदह सूत्र (अज्ञरों का समूह) है, जिनका उपयोग करके व्याकरण के नियमों का अत्यन्त लघु रूप देने में पाणिनि ने सफलता पायी है।

नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नव पञ्च वारम्।
उद्धर्त्तु कामः सनकाविसिद्धान्त एतद्विमर्शे शिवसूत्रजालम्।।

अर्थात् "नृत्य (ताण्डव) के अवसान (समाप्ति) पर नटराज (शिव) ने सनकादि ऋषियों की सिद्धि और कामना का उद्धार (पूर्ति) के लिए नवपंच (नौ और पाँच अर्थात् चौदह) बार डमरू बजाया। इस प्रकार चौदह सूत्रों का ये जाल (वर्णमाला) प्रकट हुई। डमरू के चौदह बार बजने से चौदह सूत्रों के रूप में ध्वनियाँ निकली, इन्हीं ध्वनियों से व्याकरण का प्राकट्य हुआ।" इसलिए व्याकरण सूत्रों के आदि प्रवर्तक भगवान सदा शिव को माना जाता है। प्रसिद्ध है कि महर्षि पाणिनि ने इन सूत्रों को देवाधिदेव शिव के आशीर्वाद से प्राप्त किया, जो कि पाणिनीय व्याकरण का आधार बना।

पाणिनीय व्याकरण का नाम अष्टाध्यायी है। इसमें आठ अध्याय तथा लगभग चार सहस्र सूत्र हैं। अष्टाध्यायी में छः प्रकार के सूत्र बताए गए हैं; वे हैं– संज्ञा, परिभाषा, विधि, नियम, अतिदेश और अधिकार। महर्षि पाणिनि की मुख्यतः निम्नलिखित आठ रचनाएँ हैं–अष्टाध्यायी, धातुपाठ, गणपाठ, शब्दकोश, लिङ्गानुशासन, शिक्षा, जाम्ववती विजय और द्विरूप कोष। सिद्ध महर्षि पाणिनि का व्याकरण केवल संस्कृत भाषा में लिखित वैदिक और लौकिक शब्दों को ही शुद्ध करने के लिए नहीं सिखाता, बल्कि विश्व के कोई भी भाषा को शुद्ध लिखने के लिए वैज्ञानिक विधि को परिपूर्ण (विकसित) करता है। इसी कारण महर्षि पाणिनि की विशेष विद्धता को विश्व की अनेक वैज्ञानिक भूरी–भूरी प्रशंसा कर रहे हैं। संस्कृत भाषा विश्व में विशुद्ध और प्रथम भाषा है "कहकर अनेक वैज्ञानिक भूरी–भूरी प्रशंसा कर रहे हैं। 'संस्कृत भाषा विश्व में विशुद्ध और प्रथम भाषा है" कहकर श्रवेमची **T- Shipley Dictionary of World Origins** में प्रशंसा करके लिखा हुआ वाक्य का "संस्कृत भाषा विश्व भाषा है।" नामक पुस्तक में लेखक डॉ. श्री ज्ञान लाल श्रेष्ठ जी ने समावेश करके उक्त पुस्तक का पेज नम्बर 15 में लिखा हुआ वाक्य मैं प्रस्तुत कर रहा हूँ– In contrast to the mainly spoken vernaculars sanskrit the earlist written language of our speech group, seemed well ordered refined.

इसी प्रकार उपरोक्त पुस्तक में ही एडिनवर्ग विश्वविद्यालय बेलायत का प्राध्यापक जोन लेयनस ने Discovery of Sanskrit पुस्तक में लिखते हैं-At the end of 18th century it was discovered that sanskrit the Ancient and Sacred language of India was related to Latin, Greek and to other Europian languages. अन्य एक बेलायतवासी भाषा विशेषज्ञ श्री विलियम जोन्स ने 205 वर्ष पहले कहा था–The sanskrit language bore to Greek and Latin. संस्कृत भाषा ने ग्रीक, लैटिन भाषा को जन्माया। संस्कृत भाषा में शब्दों प्रशस्त, स्वच्छता और सुन्दरता होने का वर्णन किए गए– The sanskrit language whatever be its Antiquities] is of a wonderful structure] more perfect than the Greek] more copious than the Latin and more Equisitely refined than either.

संस्कृत भाषा का चारों वेद सहित पचास से अधिक पुस्तकों का अंग्रेजी में अनुवाद करने वाले मैक्समूलर लिखते हैं– हिन्दुओं का व्याकरण और अन्वयों की योग्यता संसार में जितने जाति हैं, उन

सब से श्रेष्ठ हैं। "सर बी. बी. हण्टर कहते हैं– विश्व की सभी व्याकरणों में पाणिनीय व्याकरण सभी का राजा है।" प्रोफेसर टी. सेरबासर्कद कहते हैं– पाणिनीय व्याकरण मानव दिमाग की श्रेष्ठ रचनाओं में अद्वितीय है।

महर्षि पतन्जलि लिखते हैं कि महर्षि पाणिनीका अष्टाध्यायी लेखन में एक भी कट नहीं है। किसी भी प्रकार से अपूर्ण नहीं है। परन्तु इन्होंने अष्टाध्यायी को अधिक सरलीकृत करके तथा कात्यायन का वार्तिक को लेकर महाभाष्य लिखा। अतः ये तीनों महर्षियों को व्याकरण का ''त्रिमुनि'' कहा जाता है।

श्रीभविष्य पुराण में महर्षि पाणिनि का संक्षिप्त परिचय–

ॐ सिद्धेश्वरं शिवं वन्दे पाणीनये वरप्रदम्।
श्रेयं सदैव साधयेर्थे शङ्कर शरणागतः।।

महान–शब्द–शास्त्रस्य व्यावस्था परियोजकम्।
नमस्तं पाणिनिं सिद्धं सदाशङ्कर सन्निधम्।।''

महर्षि पाणिनि के जन्मदाता माता–पिता के बारे में भी भविष्य पुराण, मत्स्य पुराण और वायु पुराण अनुसार विश्वामित्र गोत्रीय महर्षि श्री सामन का बेटा श्री पाणिनि श्री कालिदास आदि कवियों के कृति से, दक्ष प्रजापति की कोई बेटी के कोख से पैदा होने का सबूत मिलता है–

सामनष्य सुतः श्रेष्ठः पाणिनीनांम विश्रुत। ''शङ्कर शालङ्क दाक्षी पुत्राय धीमते'' बुद्धिमान दाक्षी पुत्र को शिवजी ने प्रसन्न होकर अपना प्रसाद स्वरूप सूत्र निर्माण करने की शक्ति दी। यह वाक्य पाणिनि के पिता जिनका नाम 'सामन' है, उनका है।

परन्तु एक स्थान पर शालङ्क को पाणिनि का पिता भी बताया गया है। परन्तु भविष्य पुराण का प्रतिसर्ग पर्व में पाणिनि का पिता श्सामनश होने का प्रमाण मिलता है। (शलातरो नामः सोऽभिजनो अस्यास्तीति शालातुर त्रभवान पाणिनिः) शालातुर नामक गाँव में जन्म होने के कारण पाणिनि का नाम 'शालातुरीय' भी रहा है।

इस कारण पाणिनि का जन्म स्थान विद्वानों ने शलातुर गांव को ही माना हैं। कालान्तर में शलातुर का नाम नो क्रमशः शलातुर–सलाथूर–हलाथूर, हलाहुर, लाहुर होने की बात भाषा विद्धजन स्वीकारते हैं।

श्री वर्षाचार्य के सुयोग्य शिष्य श्री पाणिनि ने तक्षशिला विश्वविद्यालय में अध्ययन पूरा किए थे। पहले पाटलीपुत्र नगर (पटना) में निवासी उक्त आचार्य के साथ पढ़ने के लिए रहते समय अपना सहपाठी कात्यायन को परास्त करने में असमर्थ होने से खिन्न होकर श्री पाणिनि ने अपनी गुरु माँ का आज्ञानुसार विद्यातीर्थ श्री शिवजी की आराधना के लिए हिमालय की ओर चल पड़े।

अथ कालेन वर्षस्य शिष्यवर्गो महानभूत।
तत्रैकः पाणिनिर्नाम जड़बुद्धि तरो भवत्।।
स शुश्रुषापरि क्लिष्टः प्रेषितो वर्ष भार्यया।
अगच्छत् तप से खिन्नो विद्याकामो हिमालयम्।।

ध्यान तपस्या करने के लिए सहारा मरुभूमि जैसे जगह अथवा बारहों महीनों हिम से ढका हुआ हिम शिखर में ही रहने की आवश्यकता नहीं है। इसके लिए जन समूह का कोलाहल वातावरण से बिल्कुल अलग होने के साथ समशीतोष्ण जगह आवश्यक होता है। ऐसा ही स्थान खोज करते हुए तक्षशिला से उत्तर दिशा होते हुए वैदिक संस्कृति का सम्पूर्ण तपस्वियों का तपोभूमि (देवभूमि) नेपाल का तीन श्रेणी (हिमालय, महाभारत पहाड़ लेक और चुरे पहाड़ लेक) पहाड़ मध्ये महाभारत लेक ही समशीतोष्ण होने के कारण उपयुक्त स्थान खोज करते हुए आते–आते कृष्ण गण्डकी के किनारे रू रू क्षेत्र से पंच कोस के अन्दर दुर्वाशेश्वर गुफा के पास ही पहाड़ी में स्थित घनघोर जंगल तथा पहाड़ का उच्च स्थान में समथर स्थल को उपयुक्त स्थान मानकर वहीं श्री शिवजी की आराधना में संलग्न हुए। सात दिन पेड़ के पत्ते खाकर व्यतीत किया। फिर केवल पानी पीकर ही रहे और अन्त में केवल वायु ही ग्रहण करके तपस्या में जुटे रहे। शिवजी प्रसन्न होकर भावपूर्ण मुद्रा में नाचते और डमरू ने बजाते हुए प्रकट होकर आज्ञा दी– "मेरा प्रिय तपस्वी पाणिनि! वरदान माँगो!' अपना आराध्य देव श्री महादेव का ऐसा अमृतमय वचन सुनकर खुशी से गद्गद् होकर पाणिनि ने स्तुति किया।

नमो रूद्राय महते सर्वेशाय हितैशिणे।
नन्दीसंस्थाय देवाय विद्या भयङ्कराय च।।
पापान्तकाय भर्गाय नमोनन्ताय वेध से।
नमोमाया हरेशाय नमस्ते लोकंशङ्कर।।

यदि प्रसन्नो देवेश विद्यामूल प्रदोभव।
परं तिर्थ हि में देहि द्वय मातुरपितर्नमः।।

भविष्य पुराण प्रतिसर्ग पर्व 16/7/8 पाणिनि की स्तुति स्वीकार करते हुए श्री महादेव ने अपनी दिव्य डमरू बजाते हुए वरदान स्वरूप माहेश्वर सूत्र प्रदान किया।

पाणिनि के युग का समय निश्चय करने में विद्वानों का अलग–अलग विचार है। इतिहासकारों द्वारा स्पष्टीकरण से पता चलता है कि यह युग ईसा से पूर्व और बुद्ध के बाद का कालखण्ड हैं। चीनी यात्री 'युयान चुआङ भारत भ्रमण में ईसा से सातवीं शताब्दी पूर्व में आकर स्वयम् शलातुर गया था। शलातुर गान्धार, काबुल नदी और सिन्धु नदी के पास पश्चिम और उत्तर दिशा में दो कोस दूरी पर होने का प्रमाण मिलता है।

अतः यह युग ईसा पूर्व पाँच सौ से सात सौ बीच का होना चाहिए।

पाणिनि तपोभूमि–पश्चिम नेपाल अर्घाखाँची जिला के पणेना ही महर्षि पाणिनि का वास्तविक तपस्थली होने का प्रमाण विभिन्न ग्रन्थों, अनुसन्धान के विभिन्न स्रोतों में मिलता है और विश्व में अन्य किसी भी स्थान में पाणिनि तपस्थली होने का कोई भी प्रमाण न होने और इस स्थान का नाम परापूर्व काल से ही पाणिनि तपोभूमि होने के कारण स्थान का नाम से ही स्पष्ट होता है। उच्चारण में अथवा बोलचाल की भाषा में सुविधा के लिए तपोभूमि नाम छोड़कर श्पाणिनीयश शब्द ही पड़ा। कालान्तर में पाणिनीय को पाणिना, पणिना फिर श्पणेनाश, इसी क्रम में धीरे–धीरे बदलाव होकर वर्तमान में श्पणेनाश नाम से प्रसिद्ध हैं।

विक्रम सम्वत् 2028 साल से पहले का अभिलेखों में पाणिनि तपोभूमि नाम से ही मिलते हैं और तत्कालीन सी.डी.ओ. (Chief District Officer) ने

पाणिनि तपोभूमि नाम लम्बा होने के कारण केवल 'पणेना' ही लिखने का आदेश दिया। तत्पश्चात् केवल 'पणेना' लिखा जाने लगा।

विक्रम सम्वत् 2019 से पहले के अभिलेखों, सम्पत्ति के कागजातों तथा हुण्डियों में पाणिनीय तपोभूमि, पणेना, गुल्मि जिला लिखा हुआ मिलता है। इससे स्पष्ट होता है कि तत्कालीन समय में यह स्थान गुल्मि जिला में था और पाणिनीय तपोभूमि कहा जाता था।

इसी प्रकार अर्घाखाँची जिला के मध्यकालीन इतिहास का अध्ययन करने पर पाणिनि तपोभूमि कुछ समय पाल्पा बल्डेंग गढ़ी और उससे पूर्व विक्रम सम्वत् 1500 के आस–पास खाँची राज्य के अन्तर्गत रहने का तर्क त्रिभुवन विश्वविद्यालय के पूर्व इतिहास विभाग प्रमुख डॉ. राजाराम सुवेदी को लेख में मिलता है। विक्रम सम्वत् 1505 में खाँची के राजा जय भूपाल सिंह ने पाणिनि तपोभूमि में धार्मिक स्थल के जीर्णोद्वार करने के क्रम में तालाब निर्माण करने का प्रसंग उल्लेख होता है। इस स्थल में घण्टा लटकाने के लिए दो विशाल खम्बे स्थित थे, जिससे घण्टे के आकार और समय के कालखण्ड अनुमान लगा सकते हैं तथा दो खम्बों के बीच में घण्टा लटकाने के लिए लकड़ी लगाया हुआ था, लकड़ी में कुण्डा भी था, जो विक्रम सम्वत् 2062 में माओवादिओं ने नष्ट कर दिया।

पाणिनि तपोभूमि को खोज अनुसन्धान क्रम में स्थानीय व्यक्ति श्री शिवराज पोखरेल ने विक्रम सम्वत् 2015 में भारत के वाराणसी स्थित सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय के वरिष्ठ अध्यापक श्री कृष्ण मणि त्रिपाठी का सहयोग से हिन्दू धर्म ग्रन्थ भविष्य पुराण में वर्णित अवस्थाको और पाणिनि तपोभूमि को अनुसन्धान करके पाणिनि तपोभूमि ही वास्तविक सिद्धि प्राप्ति का स्थान होने का दावा करके पाणिनि तपोभूमि नामक पुस्तक बनारस से प्रकाशित किया था और पाणिनि तपोभूमि को नक्शाङ्कन करके नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान का सदस्यों के सहयोग से पुस्तक प्रकाशित किया था। इस क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में आयुर्वेदिक जड़ी–बूटी मिलने के कारण आयुर्वेदिक अनुसन्धान केन्द्र स्थापना के लिए माँग सहित नेपाल सरकार के समक्ष तथा श्री 5 महेन्द्र को विनती–पत्र भी दिया गया था। परन्तु अनेक कारणों से कार्यान्वयन के लिए आगे बढ़ नहीं सका।

जहाँ महर्षि पाणिनि ने तपस्या करके सिद्धि प्राप्त किया था, उस स्थान में महर्षि पाणिनि का एक मन्दिर बना हुआ है। इस मन्दिर का खास विशेषता है कि इसका पूर्वी छत का बारिश का पानी कृष्ण गण्डकी में मिलता है और पश्चिमी छत का बारिश का पानी बाण गंगा में जाता है।

इस स्थान में खड़ा होकर उत्तर की ओर देखने पर हिमालय शृंखला जैसे– माछापुछ्रे, धवलागिरी, अन्नपूर्णा जैसे हिम शिखर चाँदी की तरह चमकते हुए दिखते है और कास्की से लेकर रुकुम तक का पहाड़ भी दृष्टिगोचर होते हैं। इस क्षेत्र में विभिन्न फलों की भरमार है। जैसे सन्तरे, मौसमी, निम्बू, बड़ा निम्बू, आँवला, अदरक, लहसून, हल्दी, इलायची आदि से लदे हुए वादियाँ, रैना देवी, मालिका, मुर्राकोट, गोपाल सिद्धाश्रम जैसे ऐतिहासिक और धार्मिक स्थलों का दृश्य उत्तर दिशा में देखने को मिलता है और गाँव बस्ती से सटे हुए खेत–खलियान में धान, गेहूँ, मक्का आदि से हरे–भरे दृश्यावलोकन होता है। पश्चिम की ओर पोखरा थोक, धातिवाङ्ग, पटौटी का बस्तियाँ हरिहर संस्कृत विद्यापीठ, दुर्वाशेश्वर गुफा जहाँ दुर्वासा ऋषि ने तपस्या किया था, उसके नजदीक ही त्रिवेणी घाट जहाँ दुर्वासा ऋषि दैनिक स्थान करने जाते थे और ऊपर (पाणिनि तपो भूमि) से देखने पर नागवेली आकार का सुन्दर दृश्यावलोकन होता है। दुर्गा फाँट का प्राकृतिक दृश्यावलोकन भी कर सकते हैं।

पश्चिम दक्षिण में नरपानी के नजदीक नतेनाचल पर्वत (महाभारत पहाड़ श्रृंखला में) जहाँ रावण ने शिवजी को प्रसन्न करने के लिए तपस्या किया था तथा उसके पास ही शक्तिपीठ श्री सुपा देउराली का मन्दिर है, जहाँ हजारों श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं। इसी प्रकार शरीर को हिलाए बगैर दक्षिण दिशा में सिर घुमाने पर नेपाल का अन्न भण्डार तराइ क्षेत्र सहित भारत के गोरखपुर का रेलवे लाइट का प्रकाश तक देख सकते हैं और नेपाल के चार कोसे झाड़ी जंगल का मनोरम दृश्य भी अवलोकन कर सकते हैं।

इस क्षेत्र में समुद्र तल से 1800 मीटर की ऊँचाई पर मिलने वाली जड़ी–बूटियाँ चिराइतो, कुट्टी, कटुस, लेकाली बूटी, टिमुर, सेतुवा, ऐसेलु, चौतारी, काली, लाल तथा सफेद गुराँस, चन्दन, काफल, उत्तिस, पाँच औले, हर्रो, बर्रो, डेलिया, पिपला, आँवला, विभिन्न प्रजाति का सल्ला, रूद्राक्ष आदि प्रचुर मात्रा में मिलते हैं।

मुझे सबसे ज्यादा आश्चर्य तो किवी फल को देखकर हुआ। पूछने पर पता चला कि उस किवीवाइन में करीब दो क्विण्टल फल लगे हुए हैं। एक अन्य विशेष विशेषता यह है कि इस क्षेत्र में मई–जून के महीना में भी साधारण पोशाक में ठण्डी महसूस होती है। यहाँ का वातावरण बारहौं महीना ठण्डा ही रहता है।

इस स्थान में विशेष रुचि लेकर महायज्ञ को नेतृत्व करने वाले स्थानीय व्यक्ति श्री शिवराज पोखरेल जी का उपनाम शालिग्राम जी हैं। यह महाशय ही पाणिनि तपोभूमि का अनुसन्धान के क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर में बात पहुँचाने वाले व्यक्ति हैं। साहित्यिक क्षेत्र में ख्याति प्राप्त व्यक्ति मोदनाथ प्रसित जी ने भी विभिन्न अवसर पर विभिन्न माध्यम

से सराहनीय कार्य किये हैं। मैं (व्यक्तिगत तौर पर) यहाँ एक बात बताना चाहता हूँ कि इस क्षेत्र में बड़ी–बड़ी हस्तियों ने जन्म लिया तथा उन लोगों का लालन–पालन भी यहीं हुआ; जैसे– हरिहर संस्कृत विद्यापीठ का जन्मदाता हरिहर जी, उसके बाद काशीनाथ गौतम जी का भी क्षेत्र रहा।

ऐसे–ऐसे कई धनाढ्य तथा बुद्धिजीवीयो का क्षेत्र होते हुए भी पाणिनि तपोभूमि के लिए केवल दूहने के अतिरिक्त भी नहीं किया गया। बल्कि सन्त समाज का इस कुछ क्षेत्र के लिए बहुत बड़ा योगदान दिखता है।

स्वामी कृष्णानन्द परमहंस जी ने विक्रम सम्वत् 2042 से लेकर विक्रम सम्वत् 2066 तक खून–पसीना से सींचा है। वे बहुत बड़े ज्ञानी होने के साथ चौदह भाषाओं का ज्ञाता थे। वे सभी गाँव वालों को अपने बच्चों के समान प्यार करते थे, प्रत्येक वर्ष अठारह पुराणों में से एक पुराण का यज्ञ लगाते थे।

स्वामी कृष्णानन्द परमहंस जी ने इस स्थान में शुद्ध तथा साधारण जीवन जिया। विभिन्न पुस्तकों का प्रकाशन किया, भागवत पुराणों का नेपाली भाषा में छाया अनुवाद किया। वेद तथा संस्कृति को बचाकर रखने के साथ–साथ उन्होंने आयुर्वेद तथा प्रायः लुप्त जड़ी–बूटियों को भी बचाकर रखा हैं। सो ही क्षेत्र के कैलाश डाडा में पेड़–पौधों को भावी सन्तान के लिए बचाकर रखे हुए हैं और कपिलवस्तु के नन्दपुर में भी इसी प्रकार का संरक्षण कर रहे हैं।

स्वामी कृष्णानन्द परमहंस जी की इच्छानुसार उनकी समाधि भी नजदीक ही बनी हुआ है। परापूर्वकाल से ही पाणिनि तपोभूमि दह में श्रावण महीना में मेला भरता है और वहाँ के तालाब का पवित्र जल में स्नान करने के लिए लोग दूर–दूर से लोग आते हैं।

देश के विभिन्न हिस्सों से सन्तों की मण्डली आकर डेरा डालते हैं। इस क्षेत्र में सराहनीय कार्य के लिए विक्रम सम्वत् 1970 के दशक में योगी थन्थापी बाबा का योगदान रहा। इसके बाद तिनगिरे के स्थानीय व्यक्ति पल्टने जोगी ने सब कुछ सँभाला। श्री भुवनेश्वर पोखरेल ने तालाब का जीर्णोद्धार, शिवजी की मूर्ति स्थापना तथा अन्य कार्य करवाया। तिनगिरे से ऊपर का भू–भाग से लेकर डाडा कटेरी मोटर मार्ग के ऊपर का भू–भाग पाणिनि तपोभूमि का भू–भाग है। यहाँ विभिन्न औषधीय वनस्पति के साथ–साथ वन्य जानवरों जैसे–शेर, बाघ, मृग, कालिज, खरगोश आदि सामान्यतः दिखते रहते हैं।

पर्यटकीय दृष्टि से पाणिनि तपोभूमि को व्यवस्थित करने की जरूरत है। इस क्षेत्र का समुचित व्यावस्थापन, विकास तथा प्रचार–प्रसार भी होना है।

इस स्थान को विश्व सम्पदा सूची के अन्तर्गत रखने के लिए पहल करने की जरूरत है। आध्यात्मिक योग साधना और आध्यात्मिक गन्तव्य के रूप में इस स्थान का विकास होना चाहिए। संस्कृत भाषा व्याकरण का उद्‌गम स्थल को भाषा विद्धानों के लिए परामर्श के केन्द्र के रूप में विकसित करने की जरूरत है।

वर्तमान में बिजली, पानी, धर्मशाला यहाँ की प्राथमिक आवश्यकताएँ हैं। कुछ वर्ष से थोड़ा–बहुत कार्य हो रहा है। नेपाल के एक सौ धार्मिक एवं पर्यटकीय गन्तव्य के रूप में यह स्थान भी अब आकर सूचीबद्ध हो गया है।

एक सभा स्थल भी निर्माणाधीन है। तिनगिरे से पाणिनि तपोभूमि तक पक्की सड़क का निर्माण भी हो चुका है। मन्दिर में पुजारी केवल सुबह 9 बजे से 11 बजे तक ही मिलते हैं। आस–पास के क्षेत्र की साफ रखने के लिए झाड़ियों का कटाई शुरू हो चुकी है। सूत्रों से पता चला है कि जंगली झाड़ी को कटान करके विभिन्न जड़ी–बूटियों के पौधे और किवी फल का बेल लगाने की योजना है।

नेपाल का मेरुदण्ड माने जाने वाला महेन्द्र राजमार्ग जो पूर्व मेचि अन्चल से पश्चिम में महाकाली अन्चल तक पहुँचा हुआ है। बुटवल से लगभग 35 किलोमीटर पश्चिम में शाल झण्डी, (कपिलवस्तु) से ढोर पाटन मार्ग होते हुए पाणिनि दह जा सकते हैं। महेन्द्र राजमार्ग से उत्तर में पाणिनि तपोभूमि तक विद्युतीय साधन (केबुल कार) का विकसित करने से इस स्थान सही मायने में धार्मिक एवं पर्यटकीय क्षेत्र बनने में कोई नहीं रोक सकेगा और व्याकरण का जनक पाणिनि तपोभूमि का यश भी चारो ओर फैलेगा। सबसे खास बात तो यह है कि इससे पहाड़ों से पलायन रुकने में भी मदद मिलेगा और आश्चर्य न होगा कि बुटवल का व्यापारी शाम को प्रतिष्ठान बन्द करके अपना घर पाणिनी तपोभूमि क्षेत्र में आवास के लिए आना चाहेगा इस लेख को लिखने का मेरा सिर्फ एक ही उद्देश्य है कि किसी भी प्रकार से येन–केन प्रकारेण पाणिनि तपोभूमि का प्रचार–प्रसार करना तथा इस महान स्थल को उचित सम्मान प्राप्त कराकर विश्व सम्पदा के रूप में प्रस्तुत करना है। पाणिनि तपोभूमि व्यावस्थापन, संरक्षण एवं संवर्धन समिति के कोषाध्यक्ष श्री पुष्कर राज पोखरेल जी ने विभिन्न पत्र–पत्रिकाएँ तथा अन्य सामग्रियाँ उपलब्ध कराया और इस स्थान को बेहतरी के लिए कुछ करने के लिए हौंसला बढ़ाने के कारण इष्टदेव श्री राम की असीम कृपा से इस कार्य में लगा हुआ हूँ। हाँ, श्री पुष्कर राज पोखरेल का एक इच्छा है कि विश्व के माने हुए कुछ संस्कृत, हिन्दी तथा नेपाली भाषा के भाषा विद्वानों का इस स्थान में सम्मेलन कराकर भाषा अनुसन्धान केन्द्र के रूप में पाणिनि तपोभूमि दह को पहचान कराने का है।

आप सभी से करबद्ध प्रार्थना है कि अपने–अपने स्थान से जो जिस प्रकार से (तन, मन, धन से) सहयोग कर सकते हैं, करने का कष्ट करें। हमारे पूर्वज ऋषि–मुनियों का सम्मान, सत्कार तथा उनके कर्मभूमि उत्थान करना हम सभी का कर्तव्य है। विशेष सद्‌भाव के साथ सिर झुकाकर, हाथ जोड़कर, घुटने टेककर हमारे प्रेरणा स्रोत स्वामी जी और आचार्य जी से विशेष अपेक्षा रखते हुए आप सभी का सहयोग तथा मार्गदर्शन, आशीर्वाद शिरोधार्य है।

सेब की चटनी

परम श्रद्धेय आचार्य
बालकृष्ण जी महाराज

काल–मात्रादि का निर्देश

सेब को धोकर छील लें और छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें। सेब के बीजों को बाहर निकाल दें।

सामग्री –

सेब	1 बड़ा
राई	1/4 छोटा चम्मच
मेथी	1 चुटकी
हिंग	1 चुटकी
हल्दी	1 चुटकी
लाल मिर्च पाउडर	1/2 चम्मच (छोटा)
नमक	स्वादानुसार
चीनी	2 छोटे चम्मच (2–4)

पूर्वतैयारी –

1. सेब को धोकर छील लें और छोटे–छोटे टुकड़ों में काट लें।
2. सेब के बीजों को बाहर निकाल दें। (4)

विधि–

1. एक कड़ाही को गर्म करें व उसमें राई भूनें।
2. राई के चटकने पर उसमें हींग, मेथी व हल्दी डालकर तुरन्त सेब के टुकड़े डालें यदि आवश्यक समझें तो थोड़ा पानी भी डाल सकते हैं।
3. उन्हें अच्छी प्रकार चलाकर मिला लें।
4. फिर उक्त मिश्रण में चीनी, नमक और मिर्च पाउडर डालकर पकाएं व चलाते रहें।
5. मिश्रण के पक जाने पर जब सेब नरम हो जाए तो कड़ाही को आंच से उतारें, तैयार चटनी को ठण्डा करके हवाबन्द डिब्बे या कांच आदि के बर्तन में सुरक्षित रखें।
6. इस पौष्टिक व अद्भुत चटनी को खाने के लिए परोसें। (6–8)

जिन्दगी

खुश रहकर गुजारो,
तो मस्त है जिदंगी
दुःखी रहकर गुजारो
तो त्रस्त है जिदंगी
तुलना में गुजारो
तो पस्त है जिदंगी
इंतजार में गुजारों
तो सुस्त है जिदंगी
दिखावे में गुजारो,
तो बर्बाद है जिन्दगी
सीखने में गुजारो
तो किताब है जिदंगी
मिलती है एक बार
प्यार से बिताओं जिदंगी
जन्म तो रोज होते है,
यादगार बनाओ जिदंगी

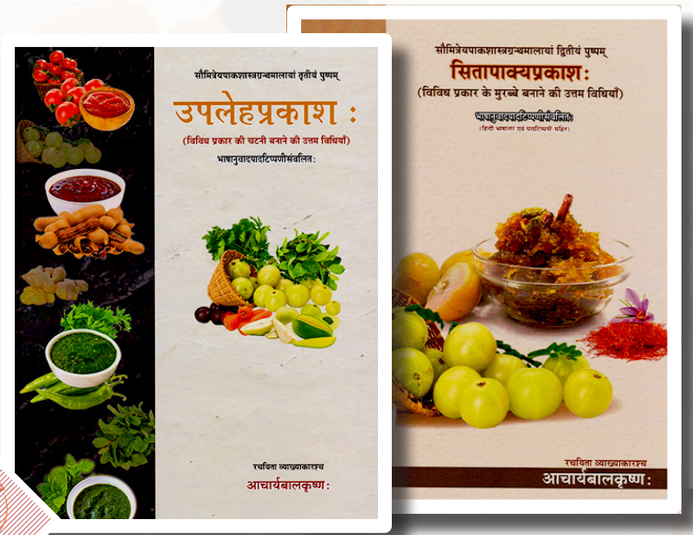

Fun. Fast. Tasty. Delicious.

Bring Home The The Trasure Trove Of Home Made Recipes & Make Your Mundane Food Helathy and Delicious

A Book By

Ayurved Shiromai Param Sharaddhey
Acharya Balkrishna Ji Maharaj

5 PRANAYAMAS
TO MAKE YOU AIR POLLUTION PROOF

-Yogaguru Neha Karki

Organic food and home grown food might be the solution for food adulterations. Boiled & RO Purified water might be the solution for water pollution. I am sharing some magical yogic mantras here to help you become air pollution proof. There is a strong and miraculous weapon, called "PRANAYAMA" to make your respiratory system strong enough from within and make it air pollution proof. It is scientifically effective. Regular practice of pranayama makes the human body strong and healthy, not only physically but also mentally, emotionally and spiritually. Here is a pranayama series to tackle air pollution:

Pollution is one of the biggest challenges humanity is facing today. Health complication of air pollution, water pollution and food adulterations are creating massive health complications in society. Government all over the world and other concerned authorities are toiling hard to control it.

1. Kapabhati- Sit in a comfortable position. Take a deep breath. Then, keep exhaling through your nostrils while contracting your abdominal muscle every time when you exhale. Practice this for 5-10 minutes regularly.
Note: - High B.P patients if tired in in-between, should relax taking deep breathes.

2. Anuloom-Viloom- Remain sited in the same position. Block your right nostril with the right thumb. Exhale & inhale through left nostril. Block your left nostril with ring finger & middle finger. Exhale & inhale through the right nostril. Exhale & Inhale from the left nostril. Repeat the whole process for 10-15 minutes.

3. Suryabhedi- Be there in the same position. Gently block your left nostril with the ring finger & middle finger of the right hand. Deeply inhale and exhale through the right nostril. Continue this practice for 5-10 minutes.
Note- It is practiced in the winter season. High B.P patients should avoid this.

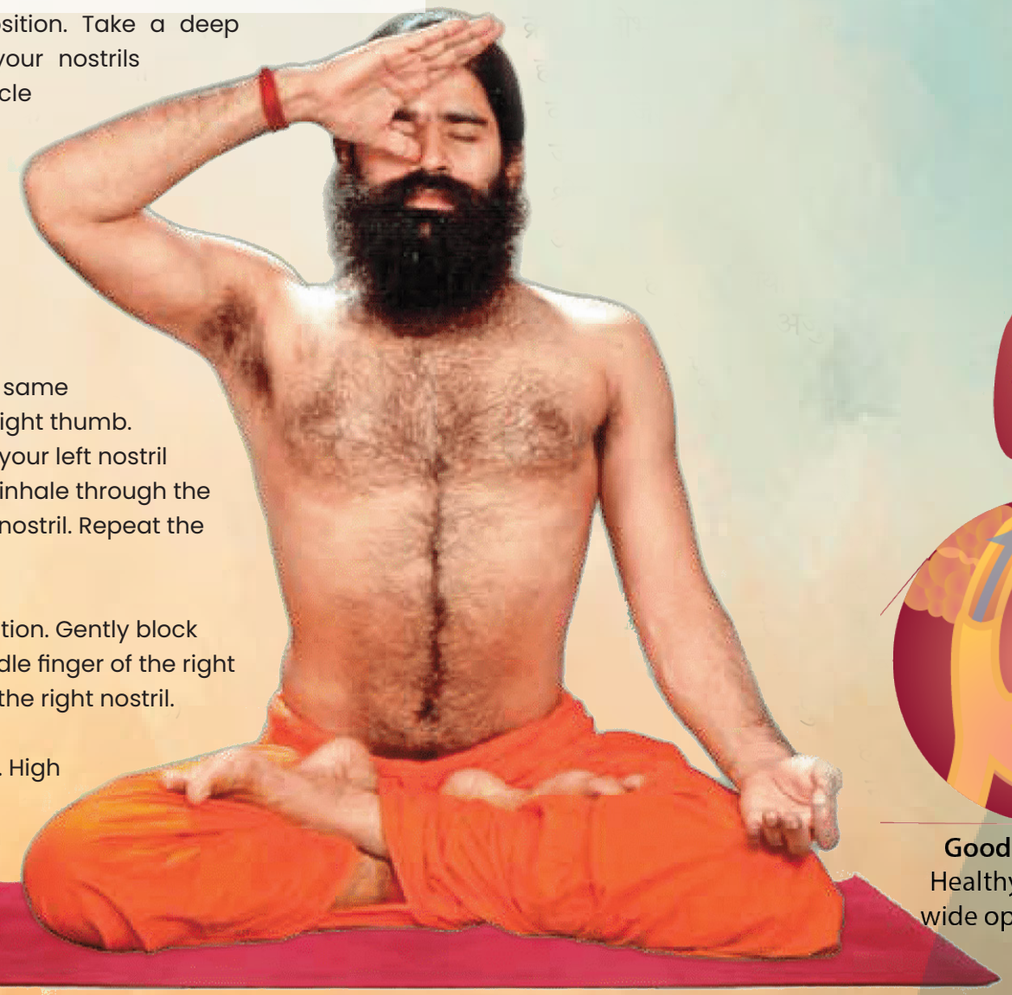

4. Bahiya Pranayama- Inhale deeply. Exhaling assume 3 locks. To start with, contract the abdominal muscle and pull them up as much as possible. Tilt your chin down pressing the collarbone with chin. Pull the perineum muscle up. Hold this position as long as you are comfortable. Open your chin lock and while inhaling release the abdominal lock and finally perineum lock. Repeat this process for 3 times.

5. Mahaprana Dhwani- Sit in the same position. Take a long and deep breath and while exhaling chant "Hum" sound. Repeat this chanting for 10-15 times.

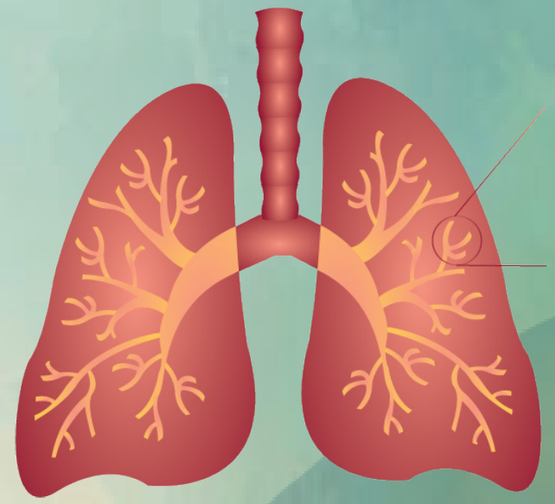

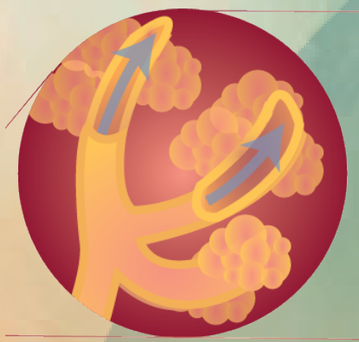

Good air quality
Healthy lungs have wide open pathways

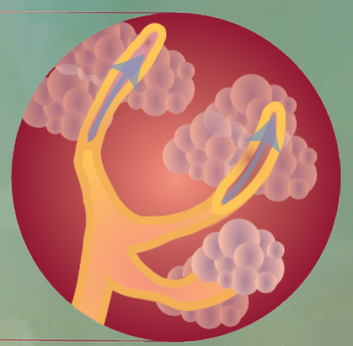

High ozone levels
Muscles contract, pathways for air are narrowed, and breathing is difficult

आयुर्वेद विशेषांक

आयुर्वेदीय पंचकर्म चिकित्सा

पंचकर्म शब्द से ही इसका अर्थ स्पष्ट है कि ये पाँच प्रकार के विशेष कर्म हैं। ये शरीर से मलों व दोषों को बाहर निकालते हैं। पंचकर्म–चिकित्सा आयुर्वेदीय चिकित्सा का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग हैं, क्योंकि कई बार अनेक प्रकार की औषधियों का सेवन करने पर भी रोग बार–बार आक्रमण करते रहते हैं।

इन रोगों से बचाव व इनके उन्मूलन के लिए शरीर के मलों व दोषों को बाहर निकालने वाली (Eliminition Therapy) जो संशोधन की चिकित्सा–प्रक्रिया (Method) है, उसे ही पंचकर्म–चिकित्सा कहा जाता है। पंचकर्म–चिकित्सा से पूर्व जिन कर्मों को किया जाता है, उन्हें पूर्वकर्म कहा जाता है, पूर्वकर्म के अन्तर्गत संशमन एवं संशोधन चिकित्सा की जाती है, उसमें स्नेहन

और स्वेदन का विशेष महत्व है। ये पाँच कर्म निम्नलिखित हैं–

1. वमन (Emetic therapy)
2. विरेचन (Purgative therapy)
3. नस्य (Inhalation therapy or Errhine)
4. अनुवासन वस्ति (A type of enema)
5. निरूह वस्ति (Another type of enema)

सुश्रुत आदि कुछ विद्वानों ने नस्य के स्थान पर 'रक्तमोक्षण' **(Blood letting therapy)** को पंचकर्म में गिना है। इन सभी प्रकार के कर्मों को करने से पहले यह देखना आवश्यक होता है कि रोगी शारीरिक और मानसिक दृष्टि से उसके योग्य है भी या नहीं? अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि हो सकती है। पंचकर्म से पहले जो कुछ तैयारी की जाती है, उसे 'पूर्वकर्म' तथा बाद में जो कुछ सावधानी व पथ्य–अपथ्य का ध्यान रखना होता है, उसे 'पश्चात् कर्म' कहा जाता है। रोगी के अनुसार विशेष प्रकार की औषधियों का चयन करके ही विशेष विधि (प्रक्रिया) का प्रयोग किया जाता है। अब आगे इन पाँचों कर्मों का संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है।

- कफ के निर्हरण अर्थात् बाहर निकालने के लिए (Elimination) वमन (Emesis) सर्वश्रेष्ठ है।
- पित्त के निर्हरण के लिए विरेचन (Purgation) सर्वश्रेष्ठ है।
- वात के निर्हरण के लिए एनिमा या बस्ति (अनुवासन और आस्थापन, दोनों) सर्वश्रेष्ठ है। शरीर में कोमलता व मृदुता (Tenderness) लाने के लिए स्वेदन (Fomentation0 सर्वश्रेष्ठ है।

वमन

जिस चिकित्सा में उल्टी या वमन (Vomiting) लाने वाली औषधियों का प्रयोग करके आमाशय की शुद्धि की जाती है, उसे वमन कर्म कहते हैं। इस चिकित्सा का प्रयोग अधिक गर्मी व अधिक सर्दी के समय को छोड़कर करने का विधान है। वमन कर्म उन व्यक्तियों के लिए उपयोगी है, जो कफज और पित्तज रोगों से पीड़ित हैं। इन रोगों के अन्तर्गत खाँसी, श्वास (अस्थमा), जुकाम, कफज ज्वर, जी मिचलाना, भूख न लगना, अपच, टॉसिल्स (गलशुण्डी), रक्ताल्पता (एनीमिया), विष का प्रभाव, शरीर के निचले अंगों से रक्तस्राव, कुष्ठ एवं अन्य चर्मरोग (खुजली, विसर्प आदि), गाँठे व गिल्टी, सूजन, नाक की हड्डी का बढ़ना, मूत्ररोग, ग्रहणी रोग, अतिनिद्रा, तन्द्रा (Drowsiness), शरीर में किसी अंग की वृद्धि, मिर्गी, उन्माद, पतले दस्त, कान का बहना, चर्बी बढ़ना व इससे उत्पन्न रोग, दुष्ट प्रतिश्याय (साइनस) तथा नाक, तालु व होंठ का पकना आदि हैं।

विरेचन

जब आँतों में स्थित मल पदार्थ को गुदा द्वार से बाहर निकालने के लिए औषधियों का प्रयोग किया जाता है, तो इस क्रिया को विरेचन कहते हैं। यह एक महत्त्वपूर्ण संशोधन (Purgation) कर्म है। इसका प्रयोग सामान्यतः शरद्–ऋतु में किया जाता है, परन्तु यदि रोग गम्भीर हो, तो किसी भी ऋतु में इसका प्रयोग किया जा सकता है।

सामान्यतः शरीर में शुद्धि लाने के लिए तो विरेचन क्रिया का प्रयोग किया ही जाता है, इसके अतिरिक्त पित्त का प्रकोप, आम (आधा पचा अथवा बिल्कुल ना पचा भोजन) से उत्पन्न रोग, अफारा और कुष्ठ जैसे अभयंकर चर्म रोगों को दूर करने के लिए भी विरेचन–कर्म का प्रयोग किया जाता है। इसके सम्यक् प्रयोग से इन्द्रियों में शक्ति, बुद्धि में ताजगी, पाचकाग्नि में वृद्धि तथा रक्त, रस आदि धातुओं और शारीरिक बल में स्थिरता आती है।

नस्य कर्म अथवा शिरोविरेचन

सिर, नेत्र, कान, नाक व गले के रोगों में जो चिकित्सा नाक द्वारा ली जाती है, वह नस्य अथवा

शिरोविरेचन कहलाती है। नस्य शिर से कफ आदि दोषों को बाहर निकालता है। इसके लिए तीक्ष्ण प्रभाव वाले तेलों अथवा तीक्ष्ण औषधियों के रस या क्वाथ से पकाए गए तेलों का प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त औषधियों के रस या चूर्ण का प्रयोग भी किया जाता है। नस्य का प्रयोग कफज, ऊर्ध्वजत्रु (नाक, कान, गला व सिर) के रोगों में एवं शिरःशूल, स्वरक्षय, पीनस, प्रतिश्याय, शोथ (सूजन), अपस्मार (मिर्गी), कुष्ठ जैसे भंयकर चर्मरोग व अरुचि में किया जाता है।

अनुवासन बस्ति

जिस चिकित्सा–कर्म में गुदामार्ग द्वारा औषधि प्रविष्ट कराई जाती है, उसे बस्ति–कर्म कहते हैं। जिस बस्ति–कर्म में केवल घी, तेल आदि स्नेह द्रव्यों अथवा क्वाथ आदि के साथ अधिक मात्रा में स्नेह पदार्थों का प्रयोग किया जाता है, उसे 'अनुवासन' अथवा 'स्नेहन बस्ति' कहा जाता है। इसके प्रयोग से कोष्ठ की शुद्धि के साथ–साथ स्निग्धता और स्थानीय कोमलता भी आती है। अनुवासन बस्ति से शरीर में पुष्टता आती है, शक्ति, स्वास्थ्य व आयु में वृद्धि तथा रंग में निखार आता है।

निरूह बस्ति

जिस बस्ति कर्म में कोष्ठ की शुद्धि के लिए औषधियों के क्वाथ, दूध और तेल का प्रयोग किया जाता है, उसे निरूह बस्ति कहते हैं, क्योंकि यह बस्ति शरीर में वात आदि दोषों और धातुओं को सम स्थिति में स्थापित करने में सहायक है, अतः इसे आस्थापन बस्ति भी कहते हैं।

वातज रोग, उदावर्त (वायु का ऊर्ध्व गमन), वातरक्त (गठिया), विषम ज्वर (मलेरिया), उदर रोग, पेट में अफारा, मूत्रशय में पथरी, शूल, अम्लपित्त (Hyperacidity), मन्दाग्नि, मूत्र में रुकावट, हृदय रोग, प्रमेह, रक्त प्रदर तथा कब्ज जैसे रोगों से पीड़ित व्यक्ति को निरूह बस्ति देनी चाहिए।

देश के आयुर्वेद और योग के अनुसंधान में पतंजलि अग्रणी

यूएसए की विश्वविख्यात स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी एवं यूरोपियन पब्लिशर्स एल्सेवियर के द्वारा जारी विश्व के अग्रणी वैज्ञानिकों की सूची में आयुर्वेद शिरोमणि परम श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण जी महाराज हुए शामिल

यूएसए की विश्वविख्यात यूनिवर्सिटी एवं यूरोपियन पब्लिशर्स एल्सेवियर द्वारा जारी विश्व के अग्रणी वैज्ञानिकों की सूची में आचार्य बालकृष्ण जी को शामिल किया गया है जिससे न केवल पतंजलि अपितु आयुर्वेद व योग के प्रति निष्ठा रखने वाले वैज्ञानिक व अनुसंधानकर्ता सभी गौरवान्वित अनुभव कर रहे हैं। इससे पहले UNO की संस्था (UNSDG) द्वारा भी आचार्य जी को सम्मानित किया गया था। योगऋषि स्वामी रामदेव जी ने कहा कि आचार्य जी ने विश्व के अग्रणी व ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिकों में स्थान प्राप्त कर बॉटनी बेस्ड मेडिसिन सिस्टम, योग– आयुर्वेद चिकित्सा तथा चिकित्सा के परिणामों को वैश्विक स्तर पर गौरवान्वित किया है। आयुर्वेद के क्षेत्र में कार्य करने वाली पतंजलि पहली ऐसी संस्था है जिसके पास NABH मान्यता प्राप्त दो हॉस्पिटल के साथ NABL, DSIR, CPCSCEA, DBT से मान्यता प्राप्त विश्वस्तरीय अनुसंधान प्रयोगशालायें भी हैं।

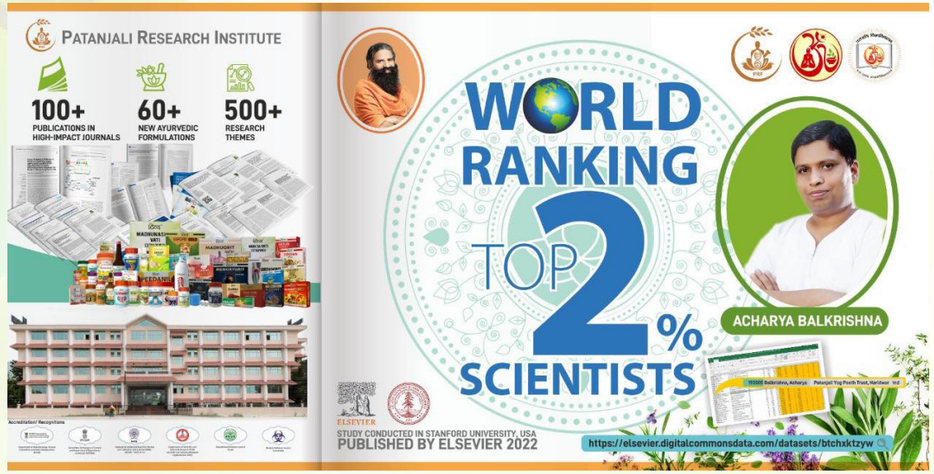

आचार्य जी के नेतृत्व में संचालित पतंजलि अनुसंधान संस्थान के अन्तर्गत अनेकों आयुर्वेदिक जड़ी–बूटियों पर वृहद् स्तर पर अनुसंधान करके उन्हें विभिन्न विश्व प्रसिद्ध रिसर्च जर्नल्स में प्रमुखता से प्रकाशित किया गया। यहाँ लगभग 500 वैज्ञानिक निरंतर शोधकार्य में संलग्न हैं।

कोरोनाकाल में जहाँ पूरा मॉडर्न मेडिसिनल सिस्टम राह तक रहा था, चारों ओर त्राहि–त्राहि थी, तब आचार्य जी के दिशानिर्देशन में पतंजलि अनुसंधान संस्थान के कुशल वैज्ञानिकों की टीम ने कोरोनिल के रूप में एक प्रामाणिक औषधि का निर्माण किया था। यही नहीं, यहाँ विभिन्न साध्य–असाध्य रोगों पर भी अनुसंधान आधारित गुणकारी औषधियाँ तैयार की गई हैं जिनमें– लिवोग्रिट, न्यूरोग्रिट गोल्ड, मैमोरिग्रिट, मधुग्रिट, बीपीग्रिट, कार्डियोग्रिट गोल्ड, श्वासारी गोल्ड, पीड़ानिल गोल्ड, ब्रोंकोम, आईग्रिट व इयरग्रिट आदि प्रमुख हैं। इसके साथ ही आचार्य बालकृष्ण ने सैकड़ों ग्रन्थों, वनस्पति आधारित पुस्तकों, पाण्डुलिपी आधारित पुस्तकों की रचना कर अद्वितीय कार्य किया है। योग–आयुर्वेद में ही 80 भाषाओं में रिसर्च बेस्ड पब्लिकेशन्स हैं। वर्ल्ड हर्बल इन्साइक्लोपीडिया ऐसी ही कालजयी रचना है जो आने वाली कई पीढ़ियों के लिए प्रेरणाप्रद तथा मार्गदर्शक की भूमिका निभाएगा। इसके 109 भागों में से 51 भागों का प्रकाशन हो चुका है, शेष 58 भाग आने वाले कुछ वर्षों में प्रकाशित किए जाने का लक्ष्य है।

शरीर व उसमें निहित शक्तियाँ

[आयुर्वेद शिरोमणि परम श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण जी महाराज

आयुर्वेद एवं योग आदि अध्यात्म-शास्त्रों में जहाँ शरीर का सूक्ष्म वर्णन किया है, वहां उसकी अन्तश्चेतना को भी बहुत सूक्ष्मता व गहनता के साथ समझाया गया है। उन शक्तियों के ज्ञान व जागरण के द्वारा अनागत रोगों से बचाव तथा आगत रोगों से मुक्ति प्राप्त कर परमानन्द की प्राप्ति के उपायों का भी वर्णन किया गया है।

REPRESENTING INDIA IN IRAN

Shreejay Mall

To spread the Indian culture and for mutual harmony, Param Shraddhey Acharya Ji Maharaj visited Iran on December 2022. During his visit, he met with Iranian Vice President Honorable Dehghani Firouzabadi in Tehran and presented him with the Rudraksha Mala as a sign of respect. To further accelerate the research on agriculture and traditional herbs and Integrated Medicinal System Hon'ble Vice-President agreed to initiate the student exchange program. Acharya Ji Maharaj also met with the President of Bank Pasargad (Iran's biggest bank), Mr. M. Ghassemi, and discussed about the cooperation on various Fin-tech products, Digital Agriculture, and POS machines of Bharuwa Solutions to which, everyone unanimously approved the constitution of a high-level committee of senior officials of Patanjali. Patanjali's years of consistent hard work was well appreciated when Acharya Ji Maharaj presented Patanjali's developmental work in the field of herbal research in front of the Vice-Chancellor and faculty members of Tehran University. Acharya Ji Maharaj's three day stay in Iran opened a wide spectrum of possibilities to establish cultural sublimity and to create fraternity between the two countries.

دانشگاه تهران خوش آمدید

Acceptance of Ayurveda-Based Bhasmas' Therapeutic Role in Global Scientific Fraternity

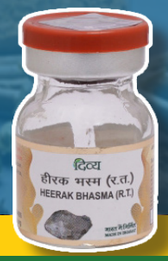

It is considered in Ayurveda that thermal treatment and burning of metals transforms those into biocompatible materials.

ACS OMEGA

http://pubs.acs.org/journal/acsodf Article

Investigating the Role of Classical Ayurveda-Based Incineration Process on the Synthesis of Zinc Oxide Based Jasada Bhasma Nanoparticles and Zn^{2+} Bioavailability

Acharya Balkrishna, Deepika Sharma, Rohit K. Sharma, Kunal Bhattacharya, and Anurag Varshney*

Cite This: https://doi.org/10.1021/acsomega.2c05391 Read Online

Patanjali Research Institute, Haridwar's scientists showed that the classical sixteen step high-temperature incineration process transforms Jasada bhasma into nanoparticles and make them highly biocompatible. The research work was acknowledged and published in the prestigious American Chemical Society's peer-reviewed journal 'ACS Omega' (http://pubs.acs.org/doi/10.1021/acsomega.2c05391) These refined nanoparticles form of Jasada bhasma imparts thier medicinal characteristics by making zinc ions bioavailable through oral intake for medical treatments, while causing no negative side-effects. The old age Rishi-parampara of India has given wonderful medicines through classical Ayurveda-based medicinal system. In addition, the classic metal-bhasma synthesis pathway produces therapeutic metal-based drugs with non-toxic characteristics.

NIR BAHADUR GURUNG

A man who wrote his own Fate

A proud but illiterate Gorkha, he overcame abject poverty to somehow come to Darjeeling and join the Gorkha Regiment with dreams in his eyes to win many awards and decorations for bravery. He made it into the army but unfortunately the fate played a hand. Back in his teen age days while he was on duty serving the nation in the army, on 13 January, 1983 his truck met with an horrendous accident and all the heavy ammunation boxes feel upon him.

While 4 of the accomaning soliders died instantly, he suffered a major fracture and broken spine because of which he could never walk again. Seeing his dreams getting shattered he sometimes had sucidal thoughts, but being a tough army person he did not lose hope and thirty months after the accident started building a new life for himself by getting into sports in Pune Paraplegic Rehabilitation Centre of the Indian Army. In the year January 1987 participated National Sports Championships for Paraplegics On his debut he won the gold medal in the 100 metres race. From then on there was no looking back, and the rest is history.

On 30 November 2022, Mr Nir Bahadur Gurung was awarded with wtih Major Dhyan Chand Khel Ratna Award, 2022 For his achievements in Para Athletics

KHARG BAHADUR NEPALI

Sahitya Akademi
For Saino (Drama)

ROSHAN RAI 'CHOT'

Sahitya Akademi - Yuva Puraskar
For Deshko Anuhar (Poetry)

MEENA SUBBA

Sahitya Akademi - Bal Sahitya

For Kopilaka Rangharu (Short Stories)

PURNA KUMAR SARMAH

Sahitya Akademi Translation

For Shantanukulanandan (Translated from Assamese)

हाम्रो संस्कृति

3rd Online International Deusi Bhailo Competition

-Shreejay Mall

Tihar is a 5-day long festival celebrated in Nepali culture. As a traditional Nepali festival, Deusi Bhailo is celebrated on the third and fourth day of Tihar. In this, both men and women make groups and visit different houses, dancing, and singing, taking dakshina and giving them blessings.

On 20 November to celebrate this occasion and keep the tradition alive, Hamro Swbahiman Trust, with the blessings of Param Pujya Yog Rishi Swami Ramdev Ji Maharaj and Param Shraddhey Ayurved Shiromani Archarya Bhalkrishna Ji Maharaj, conducted The "Third Online International Deusi Bhailo Competition-2022". The event witnessed dynamic participation from enthusiastic Nepali Speaking people from all around the world who not only put in their best efforts but mesmerized everyone by brilliantly depicting our Nepali culture to the world.

Hamro Swabhian Trust being a pioneer in preserving the value of Nepali culture, did its best to make this year's program a success. After a tough judgment, the result of the event was declared on 20th November 2022. Kailashpur Bahilo Toli was adjudged the first place. All the participants were awarded certificates and winners were presented with Prize money. The program was a huge success and a benchmark was set for all future activities.

To Watch All The Performances Click On The Link Below

youtube.com/HamroSwabhiman

Pram Shraddhey Acharya Ji Maharaj Felicitated at Gorkhali Sudhar Sabha, Dehradun, Uttarakhand

New Hamro Swabhiman Committee formed at Modi Nagar Uttar Pradesh

New Hamro Swabhiman Committee formed at Gurugram, Hariyana

Members of Hamo Swabhiman Trust Jharkhand and Weset Begal met each other

An Important meeting at Dehradun, Uttarkahnd

चित्र प्रदर्शनी

Hamro Swabhiman Trust, Mahila Committee Delhi provided a helping hand to the inmates of Satya Jeevan Leprosy Society, Vinobhanagar, New Delhi by Distributing ration.